# शब-ए-मे'राज

( रात्रि में चितवन से परब्रह्म का साक्षात्कार )

प्रकाशक

साहिब किताबघर, जालंधर शहर, पंजाब,

प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, उत्तर प्रदेश

# शब-ए-मे'राज

## ( रात्रि में चितवन से परब्रह्म का साक्षात्कार )

प्रकाशक

साहिब किताबघर, जालंधर शहर, पंजाब,

प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा, उत्तर प्रदेश

फ़क़ीर सय्यिदं मुहम्मद इब्न-ए-इस्लाम
सरदार महंमत रूहुल्लाह साहिबुज़्ज़माँ
दरगाह-ए-मुक़द्दस परना शरीफ़, पन्ना
पाक पंजे तन वाले की नज़रे करम
से यह किताब छपवाई गई।

मुद्रक-
बाला डिज़ाईन एण्ड प्रिंट
माई हीरा गेट, जालंधर, पंजाब

प्रतिया-एक हज़ार मात्र, संस्करण-प्रथम
विजयाभिनंद शाका 330, वर्ष 2008 ईसवी
हिजरी कमरी सन 1387, शक संवत 1930

# ''प्राक्कथन''

**ढूँढ़े सब शब-ए-मे'राज को, शब-ए-मे'राज में सब।**
**सो शबे मे'राज ज़ाहिर करी, सो शबे मे'राज देखसी अब।।**

धर्मप्रेमी सज्जनो व साथियों सप्रेम प्रणाम,

अंतत: सभी को ज्ञात ही है। कि शब-ए-मे'राज अर्थात रात्रि में चितवन से परआत्म साक्षात्कार का अदभुद, प्रकरण क़ुरान शरीफ़ के पार: पद्रहवां बनी इस्राईल एवं सत्ताईसवां के सूर-ए-नज़्म, में है। क्यो कि इस रात्रि में ही अंतिम अवतार हज़रत मुहम्मद साहिब को परब्रह्म प्रियतम स्वामी के अलौकिक सच्चिदानंद स्वरूप का दर्शन हुआ। इसका विवरण ''क़स्सुल अंबिया'' एंव ''मे'राजनामा'' ग्रंथ में है।

प्राय: सभी तिहत्तर (73) इस्लामी संप्रदायो में मे'राज शरीफ़ के इस रहस्यवादी वर्णन से सबंधित विभिन्न विचार पाये जाते है। जिनमें से मुख्यत: तीन विचारधाराए है। 1. पैग़ंम्बर मुहम्मद साहिब आत्मा से परमधाम में पहुँचे।
2. हजरत मुहम्मद शरीर समेत परमधाम गये। 3. मुहम्मद साहिब तन व आत्मा समेत परमधाम में गये।

---

**''बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम''**

अलहम्दु लिल्लाहि, मुहम्मद अलैहिस्सलातो वस्सलाम, अल्ल जी खल्कं इन्सां व अल्ल हुम्म बयां व सलातु सलामु अला सईद अंबियाई वल मुर्सलीन व अला आलैहि व असहबिही अजमाईन

मोमिन ख़्वातीन व हज़रात अस्सलामं अलैकुमं व रहमतुल्लाहु व बरकतुल्लाहु अमा बाअद,

पाक क़ुरान मजीद के पार: पन्द्रहवां (15) की सत्रहवाँ (17) सूर:-बनी अिस्राओील की आयत नम्बर एक (1) में बयान है कि ''सुब्हानल्ल जी अस्रा बि अबदिही लैलम्मिनल-मसजिदिल-ह रामि-अिलल-मसजिदिल-अक़्स़ल्लजी बारकना हौ लहु लिनरियहू मिन आयातिना अिन्हू हुवस्समीअुल-बसीर'' यानि वह पाक जो अपने बन्दे, (मुहम्मद मुस्तुफा सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम) को रातो-रात मस्ज़िद हराम, (काबा) से मस्ज़िद अक्सा, (बैतुल मुक़द्दस) तक ले गया। जिसके चारो तरफ़ हमने बरकतें रखी है। कि हम अपनी निशानियां दिखाए। बेशक वह सुनने और देखने वाला है व पार: सत्ताईसवां (27) सूरत तिरपन (53) सूर: नज़्म में भी बयान है कि वन्नज़्मि इज़ा हवा (1) मा ज़ल्ल: साहिबुकुम् व मा ग़वा: (2) व मा

इसी कारण सभी समुदाय आपस में विवाद करते रहते है। प्रत्येक संप्रदाय अपनी परंपरा को सही व दूसरों की परम्परा को गलत सिद्ध करने में घर्ष रहकर स्वयं की शक्ति का दुरूपयोग करते रहते है। लेकिन आज तक कोई भी समुदाय इसमें से किसी एक भी सिद्धान्त पर निश्चिंत नही हो सका है।

अत: विचारणीय प्रश्न यह है कि दुनिया से कोई भी प्राणी भौतिक तन से परलोक नही प्रस्थान कर सकता, विश्वामित्र जी ने अपने योगबल से एक राजा को भेजना चाहा। वह भी त्रिशंकु बनकर बीच में ही लटक गये, तथा हज़रत ईसा का भी शारीरिक रूप से परलोक जाने का सिद्धान्त संसार में प्रचलित है, किन्तु इसका कोई तर्क सत्यता की कसौटी पर पूर्णसत्य सिद्ध न हो पाया है, क्योकि अंतिम अवतार मुहम्मद साहिब ने भी दुनिया में भौतिक तन का त्याग किया, जबकि उन्हे परब्रह्म के प्रिय होने की शोभा प्राप्त है। मुहम्मद साहब परब्रह्म स्वामी के नूर का प्रताप हैं व समस्त ब्रह्माण्ड़ उनके नूर से ही प्रकाशमान है। यथा-

**''अना मिन नूरिल्लाह व क़ुल्लु शैइं मिन नूरी'' ( हदीस )**

यदि इस्लाम की सत्यता को जानना व समझना है, तो हमें साक्षात्कार के वर्णन का अध्ययन करना ही होगा, अन्यथा इस विचार का निर्मूलीकरण नही किया जा

---

यन्तिक़ु अनिल्हवा (3) अइन हुवा अिल्ला वयुंय्यूहा (4) अ़ल्लम: शदीदुल्क़ुवा (5) जू मिर्रतिन् फ़स्तवा (6) व हुव बिल्-अुफ़ुक़िल्-आला (7) सुम्मदना फ़तादल्ला (8) फ़कान क़ाब क़ौसेनि औ अद्ना (9) फ़औहा अिला अ़बदिहि मा औहा (10) मा कजबल्-फ़ुआदु मा रआ (11) अफ़तुमारूनहू अ़ला मा यरा (12) व लक़द् रआंहु नज़लतनूं अुख़्रा (13) अिन्द सिद्रतिल्-मुन्तहा (14) अिन्दहा जन्नतुल्-मअवा (15) अिज् यग़्शस्-सिद्रत: मा यग़्शा (16) मा ज़ाग़ल्बस़रू व मा तग़ा (17) लक़द् रआ मिन् आयाति रब्बिहिल्-कुब्रा (18) मतलब यह कि उस चमकते प्यारे तारें मुहम्मद की क़स्म जब वे मे'राज से उतरे तुम्हारे साहिब, (मुहम्मद) न तो बहके और न बेराह चले, वह अपनी मर्जी की बातें नही करते। यह तो हुक्म है जो उन्हें, (अल्लाह से) भेजा जाता है। निहायत ताकतवर ने उसे सिखलाया है। सख़्त कुव्वत वाले ने, फिर वह जल्वा भी सामने उतरा व नज़र में आया, और वह आसमान के सबसे ऊँचे किनारे पर था। फिर वह जल्वा नजदीक हुआ, और करीब आया फ़िर महबूब व हक सुब्हान, तआला में दो कमान के बराबर या उससे भी कम फ़र्क़ रह गया, फ़िर अल्लाह ने अपने बन्दें पर हुक्म, जो वही से भेजना था, सो भेजा, दिल ने देख़ी हुई, चीज़ में कोई झूठ नही कहा, अब क्या तुम उससे देखने पर झगड़ते हो, जो उसने देखा,

सकता है। कि इस्लाम का अर्थ ''शान्ति'' या समर्पण होते हुए भी क्यो अज्ञानता से प्रसारित उन्माद को ही इस्लाम का पयार्यवाची मान लिया जाता है।

अत: हमें शुद्ध निर्मल दिल द्वारा सहूर करना ही होगा, कि कही न कही अज्ञानता ही वास्तविक अपराध है, कि आज मोमिन शब्द का अर्थ संयमी न समझकर कट्टरपंथी लगाया जा रहा है, जो कि अनुचित भ्रम है। यदि हम इस साक्षात्कार की सत्यता जानना चाहते है। तो हमें तारतम रूपी ब्रह्मज्ञान के सदंर्भ में सहूर करना ही होगा। एवं इस्लामी आध्यत्मिकता की समझना ही होगा सत्यता को जानना होगा।

यदि हम मे'राज अर्थात साक्षात्कार की सत्यता को जान लेते है। तो निसंदेह ही इस्लाम की वास्तविकता को भी पहचान लेंगे, क्योंकि इस साक्षात्कार के प्रकरण से पहले तक समस्त सांसारिक विद्धान परब्रह्म प्रियतम स्वामी को निराकार, निर्गुण शून्य, निरंजन इत्यादि नामो से वर्णन करते थे, जबकि परब्रह्म अनुपम, अदभुद, अतुलनीय एंव अद्वितीय शुद्ध अद्वैत स्वरूप है।

परन्तु सबसे पहले दुनिया में मुहम्मद साहिब ने सौगंध उठाकर यह घोषणा की, कि मैं परब्रह्म प्रियतम स्वामी से अलौकिक साक्षात्कार करके आया हूँ,

---

हालांकि यह कोई झगड़ने की चीज़ नही है, रसूल स॰ ने उस जलवा को दो बार भी उतारते हुए देखा, अंतिम हद के पास, उसके रहने की जगह बहिश्त है। जब छा रहा था उस पर जो नूर-ए-इलाही, निगाह न हटी न हद से बढ़ी, बेशक उन्होने अपने परवरदिगार की बहुत बड़ी निशानियाँ देखी। यानि माने यह कि अल्लाह तआला ने मुहम्मद मुस्तुफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम को फ़रिश्ता जिब्रील अलैहिस्सलाम के जरिए मे'राज शरीफ़ के लिए अर्शे मज़ीद में बुलाया। फिर जिब्रील फ़रिश्ते को सिद्र तुल मुंतहा में रोक दिया, और फ़क्त अपने हबीब को ही अर्शे अज़ीम में बुलाया। बाज़ फिर्के के अफराद मे'राज शरीफ़ के सिलसिल: में बहस-मुबाहिस: करते है कि मे'राज-ए-मुहम्मद रूह से, जिस्म से, या फ़िर जिस्म व रूह दोनों से किया गया।

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल॰ के दो रूहानी सफ़र के दो वाक्यात बयान हुए है। एक को अिसरा और दूसरे को मे'राज कहा जाता है। अिसरा के रूहानी सफ़र में आपको (सल्ल॰) फ़लस्तीन की ज़ियारत कराई गई। जो ज़ाहिरी जिस्म के फ़लस्तीन जाने पर दलालत नही करती बल्कि रूहानी ज़ियारत मुराद है।

मुख्तलिफ़ आलिम हज़रात दलाईल चाहे जितनी देवें। लेकिन असलियत यह है

एंव परब्रह्म स्वामी ने मुझे अंतिम अवतार के रूप में चुना गया है, जिससे कि समस्त संसार का उद्धार हो सके।

इस्लाम को भारत में प्रचार-प्रसार करने की शोभा अनेक औलियाओं फ़क़ीरों सूफियों को भी प्राप्त है। जिन्होने कि इन्सान को जात-पात, ऊँच नीच की मलीनता से दूर करके प्रेम व विश्व-बंधुत्व का मौलिक संदेश प्रदान किया। जिससे जनसाधारण को अतुलनीय ज्ञान प्राप्त हुआ है। क्योकि इस्लाम से संबधित समस्त आधुनिक बुराईयां के उपरांत भी विश्व-बंधुत्व का मौलिक संदेश ही सबको एकता के धागें में पिरोये हुऐ है। यथा- ''**ला इक़रा फ़िददीनि**'' क़ुरान पाक सूर बक्र: आयत 205 अर्थात धर्म में उद्दंडता अथवा दबाव उचित नही है। आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति धार्मिक क्षेत्र में स्वच्छंद है।

वास्तव में इस्लाम का सत्य सूफीवाद या अध्यात्मवाद बेहद गूढ़ एवं रहस्यवादी साधना द्वारा प्रचलित है, जो कि परब्रह्म प्रियतम स्वामी ने हज़रत मुहम्मद से अली व औलिया-अल्लाह एवं असहाबा साथियों ने आत्मज्ञान हृदय द्वारा जन साधारण तक पहुँचाया है। कुछ मुठ्ठीभर कट्टरवादी इस्लाम के नाम पर

---

कि परवरदिगार-ए- आलम अपने निज़ाम के खिलाफ़ कोई भी ऐसी नजीर पेश नही करता। जिससे कि उसके कलाम-ए-इल्में इलाही में तर्फक़ा या शक शुब्ह: की गुंजाईश हो। मसलं जैसा कि क़ुरान पाक के जरिए मूसा अलै॰ पैंग़बर का किस्स: बयान किया है कि उन्होने परवरदिगार से नूर-ए-इलाही देखने की ख्वाहिश की? लेकिन नूर-ए-हक़ का ताब फ़ानी बजूद बर्दाश्त न कर सका व बेहोश हो गए। इसीलिए साबित है कि फानी वजूद का कोई भी शख़्स नूरी अर्श में दाख़िल नही हो सकता। बशर्ते कि रूहानियत में तसव्वुफ़-ए-हक़ सुब्हान तआला के आल: नूर यानि नूर जलाल व नूर जमाल का दीदार कर सकता है। बहरहाल जाहिरी आँखो से नही बल्कि बातिन नज़र से ही हक़ के नूर को देखा जा सकता।

लिहाज: साबित है कि तसव्वुफ के जरिए दीन-ए-हक़ को हासिल करके अपने महबूब-ए-आज़म की हिदायत से अपने ज़मीर को रौशन करके नूरी वकार हासिल होता है। रूहानियत के इस बुलन्द मकाम पर पहुँचकर हक़ व उसकी जात वहदत के एकदिली में आ जाऐगी।

अहम मुद्दा यह है कि मे'राज शरीफ़ का वाक्या बरहक़ है। हमें मे'राज के ज़ाहिरी किस्मों की तह में न जाकर फ़क्त मे'राज शरीफ़ का बातिनी मुताअल: करना चाहिए।

घृणा फैलाकर इस्लाम के नाम को दूषित करना चाहते है। परन्तु अंत में केवल सत्य की ही जीत होती है। ठीक ऐसे ही जैसे कि सूर्य के सामने बादल का टुकड़ा आने पर कुछ समय के लिए अंधकार तो हो जाता है। परन्तु पुनः सूर्य का प्रकाश प्रचण्डता तेज के साथ फैलता है।

प्रायः सभी धर्म संप्रदाए वालों में यह अवधारणा व्यापत है, कि परब्रह्म स्वामी चौदह लोक रूपी मिथ्या जगत में व्यापत है। यदि परब्रह्म चौदह लोक में ही विराजमान है। तब निराकार, शून्य, मोह तत्व, अनहद, सप्तस्वर, गौलोक एवं अक्षरधाम और परमधाम कहाँ पर स्थित होंगे? क्योंकि यदि चौदह लोक मृतक है। तब परब्रह्म स्वामी का परमधाम कहाँ पर अखण्ड है? इस ज्वलंत प्रश्न के उत्तर, समाधान कोई भी विद्धान बुद्धि एवं विवेक द्वारा नही कर सका। इस को हम इस उदाहरण से समझ सकते है कि यदि कोई कारीगर किसी वस्तु का निर्माण करता है तो वह उस वस्तु में नही बल्कि उससे भिन्न ही व्यापत रहता है। अतः परब्रह्म भी मिथ्या लोक से भिन्न अखण्ड शुद्ध अद्वैत स्वरूप है। इसको तारतम रूपी ब्रह्मज्ञान के द्वारा ही समझा जा सकता है।

---

क्योकि दीने इस्लाम की हक़ीक़त इस बेमिसाल वाक्या से ही वाबस्ता है। अगर्चे हम भी इस वाक्या का तहे दिल से अमल करे, तो फ़िर रूहानियत के इस बुलंद नूरी मकाम को हासिल करके पाक परवरदिगार के अज़ीम उल शान नूर का दीदार कर सकते है। जिससे कि हमें भी जहां में वलीउल्लाह यानि औलियाए उल्लाह का मर्तबा हासिल होगा। और सीरत से नेक अमल करके हम भी हक़ सुब्हान तआला को राजी कर सकते है।

ख़ुदी को कर बुलंद इतना, के हर तदबीर से पहले,
ख़ुदा बंदे से पूँछे, कि ए बंदे! बता तेरी रज़ा क्या है?

अहले ईमान वालों के बीच अक्सर यह तफ़्सरा यानि ज़िक्र होता रहता है कि अल्लाहु सुब्हान तआला सातवें आसमां पर क़ायम है। जबकि ख़ात्मुल नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम ने अपने मे'राज शरीफ के सिलसिलः में ब्यान किया है कि मुझे जिब्रील फ़रिश्ता सातवें आसमां से परे जुल्मात, हवा, तारीक और नूर मकां के बाद सिद्रतुलमुंतहा पर ले जाकर खुद अल्लाह तआला के हुक्म से रूक गया। तब मुझे अिसराफील फ़रिश्ता अर्शे मुअल्ला तक ले गया। जहां से मुझे रफ़-रफ़ के ज़रिए बारगाहे सुब्हान-ए-तआला में बुला लिया। लिहाज़ा कोई भी आलिम-फाजिल इस मुद्दे पर ग़ौर-औ-फिक्र नही करता कि यदि सातवें आसमां पर ही

**महंमद अर्श चढ़-उतर के देखाईयां, वास्ते राह मोमिन।**
**जो रूहें उतरी लैल तुल कद्र में, सो चढ़ जाए अर्श वतन।।**

इसीलिए हमें इस्लाम की सच्चाई को जानने के लिए शब-ए-मे'राज के इस अदभुद वर्णन रूपी प्रकरण को सहूर करके आत्म-चिंतन करना चाहिए। जिससे हम भी मुहम्मद साहिब के सत्य साथी बन कर संसार में एक उदाहरण के रूप में एक सत्यता की प्रतिमूर्ति बनकर आध्यात्मिकता के सर्वोच्च स्तर को प्राप्त कर सके। अध्यात्मवाद की इस सर्वोच्चता को प्राप्त करने के लिए अपनी 70,000 सत्तर हजार गुण-अंग रूपी इंद्रियों की इच्छाओं को अधीन करके ही हम सच्चरित्र प्राप्त व्यक्ति की शोभा प्राप्त कर सकते है।

अत: धर्म प्रेमी साथियों आईऐ! शब-ए-मे'राज अर्थात् चितवन द्वारा परब्रह्म के साक्षात्कार रूपी अदभुद प्रकरण को निर्मल हृदय से समझा जाय! अखिल विश्व की आत्म जाग्रति के पवित्र लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील निजानंदी एकता का एक प्रतिनिधि साथी

एडवोकेट नरेश कुमार मार्तण्डं ''तंनाज़''
हाल मकाम, जालंधर शहर, पंजाब

---

खुद अल्लाह तआला क़ायम है तो फ़िर जुल्मात, हवा, तारीक और नूर मकां के बाद सिद्रतुलमुंतहा और अर्शे मुअल्ला (नासूत, मलकूत, जबरूत, लाहूत व हाहूत) कहाँ पर क़ायम है?

चुनांचें आपसे गुज़ारिश है कि हक़ को पाने के लिए खुदी को मिटाकर हक़ सुब्हान तआला को राजी करने के उस सिरातुल मुस्तक़ीम यानि सीधे रास्ते पर चले। जिससे कि दोनो जहाँ में हम फैज़मंद हो जाए और रोज-ए-हशर के खात्मुल नबी-ए-करीम सल्ल॰ को हमारे आमाल नाम: से अल्लाह तआला के सामने शर्मसार न होना पड़े। और हम रसुलुल्लाह सल्ल॰ की आम, खास, खासुल-ख़ास उम्मत में से अपना आला मकाम हासिल कर सके। जिससे कि आँ हज़रत सल्ल॰ को भी हमारी शफाअ़त करके मर्सरत होगी। इस किताब को शाए: करने में जनाब सय्यिदं नेमत राजे की सख्त मेहनत है। अल्लाह तआला उनको इस नेकी का सिला: अता फ़रमाए। आमीन!

फ़क़ीर सय्यिदं मुहम्मद इब्न-ए-इस्लाम।
मुतर्जुमाकार फक्त वाहिद मुसाहिब वकील
वहदतुल निशात हादी सय्यिदं नेमत राजे परनवी।

# ''शब-ए-मे'राज''

## ( रात्रि में चितवन से परब्रह्म का साक्षात्कार )

निजानंद संप्रदाय की परम्परा अनुसार वर्णन यह है कि जब अंतिम अवतार मुहम्मद साहिब की आयु पचास (50) वर्ष और तीन (3) माह की हुई तो उनको चौथी बार परब्रह्म प्रियतम का पवित्र साक्षात्कार करवाया गया। विवरण इस प्रकार से है कि परमधाम से ज़ोश के शक्ति स्वरूप को यह निर्देश पहुँचा कि मेरे प्रिय मुहम्मद स॰ को परमधाम तक लेकर आईए और स्वर्ग धाम के देवताओं को आदेश दिया कि यहाँ पर अधिक सजावट कर दीजिए। क्योकि यहाँ से मेरे प्रिय ने गुज़रना है, तथा नर्क की आग को बुझा दीजिए, जिससे कि वह प्रसन्नता से मेरे समीप आ जाए। जब परब्रह्म प्रियतम के निर्देशानुसार शक्तिरूप संसार से मुहम्मद साहिब को ले जाने के लिए आए, तो मुहम्मद साहिब मक्क: अरब के पवित्र नगर में रात के समय

---

**''बयान मे'राज आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि असहाबा व सल्लम''**

रिवायत में आया है। कि रसूल-ए-खुदा की उम्र जब पचास वर्ष और तीन महीने को पहुँची, तब आं हज़रत स॰ का मे'राज हुई और शब-ए-मे'राज में चौथी मर्तबा आं हज़रत का सीना मुबारक चाक किया, ताकि दिल मुबारक में क़ुव्वत आ जाए। वास्ते सैर करने आलम-ए-मलकूत और देखने तजल्लियात इलाही के और सत्ताईसवी तारीख़ रज्जब में दरगाह-ए-इलाही से जिब्रील को हुक्म हुआ, कि रिजवान को कहो! कि बहिश्त की आराईश व हुरों और ग़िलमानों को कहो! कि वे अपने तांईं ज़ेब व ज़ीनत से आरास्ता करें। और मलाईका को कहो कि क़ब्रों में जो अज़ाब करने वाले है। आज की शब अज़ाब-ए-कब्र से हाथ उठा दें। और मालक को कहो कि दोजख़ की आग बुझा दे। पस जिब्रील ने हुक्म परवरदिगार का रिजवान को और ग़िलमानों और हूरों को, मलाईक-ए-अज़ाब को, और मालक को पहुँचाया, और रसूल-ए-ख़ुदा ने फ़रमाया कि मैं दरम्यान हतीम के सो रहा था। कि जिबील और

में अपने घर आराम फ़रमाने के पश्चात नमाज-ए-तहज्जुज रात्रिकालीन एंकात साधना या प्रार्थना अदा करने के लिए बिस्तर से उठे, एवं दैहिक स्वच्छता से बदन को पवित्र करने के लिए लोटा से पानी लेकर हथेली पर पानी डाला ही था, कि ज़िब्रील फ़रिश्ता! ज़ोश के शक्तिस्वरूप ने आकर उनके प्राण को इलाही नूर, (अलौकिक दिव्य आभा) से भरकर पवित्र कर दिया, जिससे कि उनकी सत्तर हज़ार (70,000) नफ़्स या इंद्रिया भी पवित्र हो गई। दिल की पवित्रता इसलिए जरूरी है क्योंकि दिल के विकारो की चंचलता ख़त्म किए बिना इसमें इश्क़ अर्थात अनन्य प्रेम नही समा सकता है।

तब उनको मन की गति से चलने वाले बुर्राक़ नामक शक्तिशाली अश्व पर बैठाया गया, तो बुर्राक ने अपनी पीठ पर बैठाने से पहले उसने उनसे वचन लिया। कि महाप्रलय के अंतिम समय में भी आप ही मेरी पीठ पर बैठेगे। फिर कुछ आगे चलने पर अपने उन्होने दाऐं-बाऐं से आवाज़

---

मैकाईल अलैहिस्सलाम ने  आ के मुझको उठाया और सीने से नाफ़ तक चीरकर दिल मेरा निकाला और एक सोने के तश्तरी में आब-ए-ज़म-ज़म से उसको धो के ईमान और हिकमत से भरा, फिर उसको इसी मुकाम पर रख दिया। और रिवायत है, कि जिब्रील को जनाब ए बारी से हुक्म हुआ कि ऐ जिब्रील! मंगज़ार बहिश्त से बर्राक़ और सत्तर हज़ार फ़रिश्तें लेकर मक्का में जाओ। और मेरे हबीब कुर्रेश स॰ को मेरी दरगाह-ए-मआली में पहुँचाओ। जिब्रील बमुजब इर्शाद जनाब बारी के बुर्राक और सत्तर हज़ार (70,000) फ़रिश्ते को लेकर हज़रत उम्म-ए-हानी रजि॰ के घर में ख़्वाहर हज़रत अली क़र्मुल्लाह वज्ह की पहुँचे। रसूल-ए-खुदा फ़रमाते है। कि इस शब को उम्म-ए-हानी रजि॰ के घर में बाद नमाज़ -ए-ईशा के सो रहा था, कि जिब्रील ने आ के मुझको नींद से उठाया। मैने देखा कि जिब्रील और मैकाईल दोनो मेरे सिरहाने बैठे है। और मुझको कहा कि ऐ हबीब-ए-मक़बूल सल्ल॰ उठ! आज की शब आप की मे'राज है। तब मैं उठा, तो आब-ए-ज़मज़म को इन

सुनी कि ए मुहम्मद! रूकिए, मुझे आपसे कुछ प्रश्न करने है। तब उन्होने देखा कि ! एक बूढी़ औरत श्रृंगार करके मार्ग में खड़ी हुई है। परन्तु उन्होने कुछ भी ध्यान न दिया तथा आगे चल दिए। शक्तिरूप से पूछनें पर उन्होनें बताया कि आपने उत्तर न देकर बहुत उत्तम किया। क्यो कि दाऐं-बाऐं यहूदी एवं ईसाई उम्मतों की आवाज़ थी और बुढ़िया जो श्रृंगार किए खड़ी हुई थी। (वह दुनिया रूपी माया प्रपंच जाल अर्थात सुंदरतम स्त्री के उन्नत व सुढ़ौल वक्ष, लचीली कमनीय कटि, कमर एवं ठुमकता उभयमान नितंब आपको मूल उद्देश्य से भ्रमित करने के लिए अवरोध था।) यदि आप इसमे उलझ जातें, तो आप का समुदाय भी दुनिया की माया में ही लीन रहता। तदुपरांत आपको तीन (3) प्यालें एक में दूध, दूसरे में शहद, तीसरे में शराब अथवा पानी देकर कहा कि पीजिए! परन्तु मुहम्मद साहिब ने केवल दूध से भरा प्याला ही स्वीकृत किया। तब शक्तिदेव ने उनको बताया गया कि आपने बहुत अच्छा किया जो दूध को पी गये। क्यों कि दूध से मतलब

---

के पास ले जाके मुझको आबे ज़मज़म से वज़ू करवाया और दो-दो रकअत नमाज़ पढ़वा कर, मस्जिद के दरवाज़े पर लाए। तो वहाँ एक बुर्राक़ खड़ा हुआ मैने देखा, ऐसा कि गधे से बड़ा और खच्चर से छोटा और मुंह उसका मानंद आदमी के था। और कुल्हें उसके मानंद घोड़े के, और पाँव उसके मानंद शुतुरमुर्ग के और सीना उसका शेर के और दोनो पर मर्व उसके मानंद परिंदो के, और ज़ीन और लगाम उसकी याकूत और मर्वारिद से मुरस्सा जड़ाऊँ थी। पस सवार होने में मैंने ज़रा तामिल किया। उस वक़्त हुक्म-ए-इलाही पहुँचा। ऐ जिब्रील! मेरे हबीब से पूछो कि तवक्कुफ़ करने का क्या सबब है? तब रसूल-ए-खुदा ने फरमाया। ऐ जिब्रील! आज मुझको हक़ तआला ने सरफ़राज़ किया और मेरी सवारी को बुर्राक़ भेजा। लेकिन मैं इस अंदेशे में हूँ। कि क़ियामत के दिन मेरी उम्मत के लोग नंगे भूखे-प्यासे गुनाहों के बोझ गर्दन पर रखे हुए कब्रों से बाहर निकलेंगे। और पचास हज़ार वर्ष की राह क़ियामत की आगे रखी है। और तीन हज़ार वर्ष की राह पुलसिरात की दोज़ख पर खैंची है।

अर्थात आशय निजानंद है। तब वहाँ से आगे गोर्वधन पर्वत पर पहुँचे। तो शक्तिदेव ने बताया कि आप यहाँ दो (2) पंक्तियां प्रार्थना अदा कीजिए। क्यों इस पवित्र स्थान पर ही मूसा पैग़ंबर को नूरमयी ब्रह्मवाणी की आवाज़ सुनाई दी थी। तो उन्होने वहाँ पर प्रार्थना अभिवादन समर्पित किया। आगे चलने पर एक जगह देखकर कहा गया कि यहाँ भी दो (2) पंक्तियां प्रार्थना की कर लीजिए क्योंकि यहाँ पर ही मेरा अवतरण है। तब उन्होने ऐसा ही किया। फ़िर वहाँ से उनको बैतुल मुक़द्दस पवित्र स्थल अरब के फलिस्तीन में ले जाया गया।

वहाँ पर समस्त औलिया व अंबिया अर्थात अवतार एकत्रित थे। उन सभी ने आपका हार्दिक स्वागत-सत्कार किया और उन्होने आपके नेतृत्व में परब्रह्म प्रियतम की नितांत तल्लीनता से प्रार्थना की। वहाँ से आगे जाने के पश्चात बैतुल मुकद्दस नामक प्रार्थना स्थल के एक पत्थर ने आपसे विनती की, कि मुझे सत्तर हज़ार (70,000) वर्ष हो गए है परन्तु आज-

---

क्यूँ कर तय करके मंजिल-ए-मक़सूद में पहुँचेगे? जनाब-ए-बारी से हुक्म आया। हबीब मेरे! कुछ ग़म ना कीजिए, जिस तरह मैंने आज तुम्हारे लिए बुर्राक़ भेजा है। इसी तरह तुम्हारी उम्मत के वास्ते भेजूँगा। सबको बुर्राक़ पर सवार करके, पुल सिरात से पार उतारूँगा। और तीन हज़ार वर्ष की राह एक पल में तय करवा के पहुँचाऊँगा। जब यह हुक्म हुआ तब रसूल-ए-खुदा सल्ल० बुर्राक़ पर सवार होने लगे। और बुर्राक़ कूदना- फ़ांदना करने लगा जिब्रील ने बुर्राक़ को कहा। कि ऐ बुर्राक़! तू नही जानता है। कि यह पैगंबर सल्ल० आख़रूल जमाँ है? बुर्राक़ ने कहा, सच है। बशर्ते कि क़बूल हो? फ़रमाया बयान कर, तब बुर्राक़ ने अर्ज़ की, हक़ तआला ने बहिश्त से बुर्राक़ मेरे सिवा और भी पैदा किए है। और वे सब दाग़-ए-मुहम्मदी सल्ल० रखते है। अर्ज़ मेरी यह है। कि क़ियामत के दिन भी आँ हज़रत सल्ललाहु अलैहि वसल्लम? मेरी पश्त पर सवार होवें। ताकि सब बुर्राक़ पर मुझको फ़ख्रंहोए। जब आँ हजरत सल्ललाह अलैहि वसल्लम ने वायदा फ़रमाया तब बर्राक़ ने

तक किसी का चरण मुझ पर नही पड़ा। परन्तु अब आपके पवित्र चरण रज का स्पर्श पाकर मैं अनुग्रहित धन्य-धन्य हो गया हूँ। अत: आप मेरे लिए प्रार्थना कीजिए, कि पुन: मुझ को किसी का चरण न स्पर्श हो। तब पैंग़बर साहिब ने उसके लिए प्रार्थना की। यहाँ पर विचारणीय प्रश्न का आशय यह है कि वह एक पत्थर जो (70,000) सत्तर हज़ार वर्ष से वहाँ पर पड़ा था अर्थात मानव शरीर की सत्तर हज़ार (70,000) इंद्रियों की चाहनाओं नियंत्रण करके ही प्रियतम परब्रह्म के साक्षात्कार का मार्ग सुगम हो सकता है। क्यों कि ज़ाहिरी दृष्टि से देखने पर ज्ञात होता है कि पवित्र क़ुरान में संसार की क़ुल आयु ही सात हजार चालीस (7040) वर्ष कही गई है, तो फिर 70,000 वर्ष से पत्थर वहां पर कैसे आ गया? जब कि बैतुल मुकद्दस की स्थापना मुहम्मद साहब के आने से पूर्व दाऊद पैंग़बर ने परलोक के ज्ञान निर्देश द्वारा करवाई थी। तो क्या यह स्थल संसार लोक में है? अथवा परलोक में है? जबकि दाऊद पैंग़बर तो संसार में ही अवतरित है। अत: फ़र्ख से अपनी पश्त रसूल-ए-ख़ुदा के सामने हाज़िर की। तब आँ हज़रत बुर्राक़ पर सवार हुए। और दाहिने पाँव से जिब्रील और मैकाईल मय सत्तर हज़ार फरिश्तें रकाब में हाज़िर थे। मक्का मुअज़्ज़मा और आब-ए-ज़मज़म और मकाम इब्राहिम के पास जा के एक लम्हें में बैतुल मुक़द्दस में पहुँचे। कहते है कि असना-ए- राह में एक आवाज़ दाहिने और बांईं तरफ़ से सुनी। कि ए मुहम्मद! खड़े हो! तुम से कुछ सवाल करूँगा? मैंने उस आवाज़ का कुछ ख्याल ना किया। वहाँ से आगे बढ़ा, देखा एक बुढ़िया को कि अपने तीन जेवरात और लिबास से आरास्ता कर ख़ूबसूरत बन के, सामने मेरे आ खड़ी हुई। और कहने लगी। ऐ मुहम्मद! मेरी तरफ़ देखो! सो मैने नही देखा। और आगे बढ़ा। और जिब्रील अलैहिस्लाम से मैने पूछा? वह आवाज़ दाहिने और बांई तरफ़ से कैसी आई थी? और बुढ़िया सिंगार किए कौन खड़ी थी? जिब्रील ने कहा, कि आवाज़ दाहिनें तरफ़ यहूदियों की थी। अगर आप जवाब देते तो आप की सब उम्मत यहूद हो जाती। और बाईं तरफ़ की आवाज़

विचारिए!

फिर वहां से आगे चलने पर आकाश में आदि नारायण सृष्टि-पुरूष से मिलकर अभिवादन किया। तब वहां पर एक पक्षी देखा जो कि सफ़ेद रंग का था। उसकी विशालता एक किनारे से दूसरे किनारे तक है। अर्थात पूर्व दिशा से पश्चिम दिशा तक एवं उत्तर से दक्षिण तक इसके पंख फैले हुए है। यह दिन रात निरंतर परब्रह्म प्रियतम स्वामी को स्मरण करता रहता है। यथा:-

''ए मेरे प्रियतम, आपके अतिरिक्त कोई भी महान, पवित्र व अनंत नही है। अत: हमें आपका ही निरंतर स्मरण करना चाहिए क्यों कि आप ही अखण्ड आन्नद अर्थात दिव्य अलौकिक ब्रह्मज्ञान द्वारा इश्क रूपी अनन्य प्रेम की पहचान प्रदान कर सकते है''

इस प्रकार स्मरण द्वारा प्रेममयी ब्रह्मज्ञान साधना करने मात्र से ही समस्त प्राणी संसार में जाग्रत हो जाएगें। एवं मोक्ष प्राप्त कर सकते है।

---

नस्रानियों यानि ईसाइयों की थी। अगर आप जवाब देते तो सब उम्मत आप की नस्रानी होती। और वह बुढ़िया सिंगार वाली दुनिया थी। अगर आप उसकी तरफ़ देखते तो तमाम उम्मत आप की ग़ल्ब:-ए-दुनिया में हलाक हो जाती। बआद उसके तीन प्याले एक शहद और दूसरा शराब और तीसरा दूध से भरा हुआ था। मेरे सामने लाए। मैं दूध सब पी गया। जिब्रील ने फ़रमाया ख़ूब किया, जो आपने दूध पिया क्यों कि उस दूध से मुराद इस्लाम है। और वहां से जब दूसरे मकाम में गयें, जिब्रील ने कहा इस जगह आप दो रकअत नमाज़ पढ़िए। क्यों कि ये जगह तूर सीना है। कि हक़ तआला ने इस जगह मूसा पैग़ंबर के साथ बातें की थी। तब मैंने वहां उतर के दो रक्अत नमाज़ पढ़ ली। वहां से बुर्राक पर सवार होकर आगे चला। एक जगह और नज़र आई। फ़िर जिब्रील ने कहा! कि यहाँ भी दो रक्अत नमाज़ पढ़िए। क्यों कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इस जगह मैं पैदा हुए है। फ़िर वहाँ से मैं बैतुल मुक़द्दस मैं गया। और तमाम मलाईको ने आसमान से नीचे उतर कर कहा अस्सलामं अलै कुम या नबी-

तत्पश्चात इंद्र देव को देखा जो कि संसार में जल व बर्फ़ की वर्षा करने वाला देवता है, जिससे कि समस्त संसारिक मानवो को जल की आपूर्ति प्राप्त होती है। एवं शेष पानी पर्वतों पर, पहले बर्फ़ बनकर फिर सूर्य के ताप द्वारा जल के रूप में पिघलकर नदियों से प्रवाहित होकर खेत खलिहानों में अन्न इत्यादि खाद्यान्न की उत्पत्ति का पोषण करके अंत में समुंद्र में समाहित होता है।

फ़िर उन्होने देखा कि कुछ व्यक्तियों को देवगण दण्ड प्रदान कर रहे है। उनकी जिज्ञासा को शांत करने के लिए शक्तिदेव ने बताया कि! ये लोग वे है जो कि संसार में परब्रह्म की प्रार्थना व साधना के अतिरिक्त भ्रमवश मायावी कार्यो को प्रमुखता प्रदान करके राग-रंग द्वारा नृत्य-गान में तल्लीन रहते थे। इसी कारण से इनके शीशों को कूटा जा रहा है।

दूसरे व्यक्तियों का समूह वह है, जो कि मिथ्या मान-अभिमान के अहंकार से संसार में निर्धनो, अनाथों, विधवाओं व ऋषि-मुनियों पर भी

---

उल-अव्वल व आख़रूल, और कहा क़ौल तआला!

''सुब्हानल्ल ज़ी असरा बिअ़ब्दिहि लैल मू-मिनल मस्जिदिल ह़रामि इलल् मस्जिदल्-अक़्सल्ल ज़ी बारक्ना ह़ौलहू''

**तजुर्मा** बहुत पाक है। वह जो ले गया अपने बन्दे को एक रात मस्जिद-उल-हराम से तरफ़ मस्जिद-ए-अक़्सा तक, के वह जो बरकत दी। हमने गिर्द इसके और बआद इसके जब मस्जिद अक्सा के अन्दर गये। तमाम अंबिया आकर वहां जमा हुए। और कहा, अस्सलाम अलैकुंम या नबी-उल-अव्वल व अल-आख़िर फिर तमाम नबियों के साथ दो रक्अत नमाज़ पढ़ी और उनकी इमामत की। और सब अंबिया मुकतदी हुऐ। कहते है कि मक्का-मुअज़्ज़मा से बैतुल मुकद्दस फिलीस्तीन के तीन महीने की राह है। रसूल-ए-खुदा दो क़दम में पहुँचे। और जब आँ हज़रत स॰ मस्जिद से निकले, एक पत्थर सामने बैतुल मुक़द्दस के था। उस पत्थर ने अर्ज़ किया? या रसूलुल्लाह! मुझको इस जगह में सत्तर हज़ार बरस हुऐ। किसी का क़दम मुझ पर नही

दया नही करते थे, एवं धार्मिक कार्यो के प्रचार-प्रसार में भी अपना तन, मन, धन अर्पण नही करते थे। इसी कारण इनकों दण्ड के परिणाम स्वरूप कष्टता पूर्वक गंदगी में डुबोया गया है।

इसके अतिरिक्त एक समुदाय भी देखा, जिनके सम्मुख अनंत सपदाएं रखी हुई थी। परन्तु वह उसका उपभोग नही कर सकते थे। क्यों कि यह उन व्यक्तियों का समूह है, जो कि पति-पत्नि के पवित्र संबधों के अतिरिक्त सांसारिक आर्कषण के वशीभूत होकर व्यभिचार करते थे। अर्थात पति अपनी पत्नि के अतिरिक्त एवं पत्नि अपने पति को त्यागकर पर पुरूषों से अनुचित अनैतिक दैहिक संबध बनाती थी।

एवं दूसरे उन व्यक्तियों का समूह है जो कि रोज़ी-रोटी पवित्रता की कमाई द्वारा परिश्रम कार्य न करके चोरी, हेरा-फ़ेरी एवं धोखाधड़ी से आजीविका प्राप्त करते थे। अतः इनको दहकती अग्नि के मध्य में फेंका हुआ है। जिसमें वे निरंतर जल-भुन रहे है एवं पुनः पश्चाताप कर रहे है।

---

पड़ा। लेकिन इस वक़्त आपका क़दम मुबारिक मुझ पर पड़ा। मैं चाहता हूँ कि! दोबारा दुबारा बार दीगर किसी का क़दम मुझ पर ना पड़े। आप मेरे हक़ में दुआ कीजिए। कि मैं हवा पर मुअतलक रहूँ। क़ियामत तक। तब आँ हज़रत सः ने जनाब-ए-बारी में दुआ की, वह दुआ मुस्तजाब हुई। अब तक वह पत्थर हवा पर मुअतलक है। इस जगह पर, फिर वहाँ से अज़ाईब व ग़राईब देखते हुए बुर्राक पर सवार होकर अव्वल आसमान के दर पर जा पहुँचे। जिब्रील ने दरवाज़े पर दस्तक दी। फ़रिश्तों ने पूछा। तुम कौन हो? बोले मैं जिब्रील हूँ। और यह मुहम्मद पैग़ंबर आख़रूल जमाँ है। तब फ़रिश्तों ने कहा मरहबा या रसूलुल्लाह! और दरवाज़ा खोला और दरम्यिान आसमान के दाख़िल हुए और अस्माईल वहां के फ़रिश्तों का सरदार था। सब मलाईका को ले के हम से आ के मुआनक़ा किया। फ़िर जब वहाँ से आगे बढ़े आदम बाग-ए-रिज़वान से मेरे इस्तक़बाल को आए। और कहा कि मरहबा या नबी इब्न अला सालेह फिर वहाँ से आगे बढ़े, देखा कि एक मुर्ग़ सफ़ेद अज़ीम उल-शान

इसके अतिरिक्त उन व्यक्तियों का समूह भी देखा, जो कि व्यर्थ ही दूसरो पर अतिश्योक्ति निदां कटाक्ष करते रहते थे। इसी कारण अब इनकी गर्दनों पर इतना भार रखा गया है कि वह अपनी गर्दनों को हिला भी नही सकते।

वहां पर उन्होने देखा कि एक समुदाय ऐसा भी है जो कि भयंकर गर्मी के वशीभूत होकर बैचेनी पूर्वक बिना अधरो के भ्रमण करते है। पूछने पर बताया गया कि यह वह लोग है। जो कि मिथ्या परिवर्तनमयी संसार की सांसारिक सत्ता के केंद्र बनकर निर्बल असहाय जन-साधारण पर अत्याचार करके अनुचित धन-संपदा एकत्रित करते थे, एवं व्यक्तियों पर अन्याय करके अपना स्वार्थ सिद्ध करते थे। अत: दण्ड स्वरूप इनको नर्क की अग्नि में जलाया जा रहा है।

तथा नशा करने वाले एवं अशुद्ध माँसाहारी मानवों को घृणित जानवर सूअर के समान आकृति प्रदान की है, जिससे कि ये रक्त, पीप इत्यादि

---

है। जिस्म इसका सिवा हक़ तआला के कोई नही जानता है। और एक पाँव इसका अर्श तक और दूसरा पाँव तहत-उल-सरा तक है। और एक बाज़ू उसका मशिरक़ में और दूसरा बाज़ू मगरिब में है। और सिर इसका याकूत से बना और पर उसके नूर से और ग़िज़ा उसकी, ख़ुदा की हम्द व सना है। जिब्रील से मैने पूछा ये कौन मुर्ग़ है? कहा! यह मुर्ग़ नही एक फ़रिश्ता ब सूरत मुर्ग के है।

जब रात आख़िर होती है। तब उस वक़्त यह अपने परों को झाड़ता है। और तस्बीह उसकी ये है।

''सुब्हानुल मुल्कुल क़दूसिल कबीरिल मुतआलि ला-इलाह-इल्लाहुवल हय्युल क़य्यूम''

और उसकी तस्बीह की आवाज़ से दुनिया के मुर्ग़ बेदार होते है। और अपने परों को झाड़ते है। आवाज़ देते है। फ़िर वहाँ से आगे बढ़े, देखा! एक फरिश्ता आधा जिस्म आग और आधा जिस्म बर्फ़ है। ना आग बर्फ़ को जलावे ना बर्फ़

गंदगी में निरंतर सलंग्न रहे। एवं संसार में रिश्वतखोर, व्यक्तियों के पेट अर्थात तोंद गुब्बारें की तरह फूले हुए है। जब भी वह उठकर चलने का प्रयास करते है तो अपने तोंद के भार से गिर पड़ते है। एवं इनके तोंदो के अंदर असँख्यों सर्प मंडला रहे हैं।

तत्पश्चात् सूद अर्थात ब्याज़ खाने वालो को देखा कि उनके मुँह काले एवं आँखे नीली है तथा अग्नि के वस्त्र पहने हुऐ है, एवं दण्डाधिकारी उनको कोड़े मार रहे है। वे चिल्ला रहें है। इसके अतरिक्त ऐसी स्त्रियों का झुण्ड देखा, जो कि अपने घर-परिवार एवं पति की आज्ञा का पालन नही करती थी। उनको भी नर्क की अग्नि में जलाया जा रहा था।

इसके पश्चात् ऐसे व्यक्तियों का समूह भी देखा जिनके शरीरों पर अनगिनत घाव बने है एवं उनमें से रक्त, पीप इत्यादि घृणित रिसाव हो रहा है। ज़ोश के शक्ति देव से पूछने पर उसने बताया कि ये वे व्यक्ति है जो कि अपने माता-पिता की अवज्ञा करते थे एवं उनको अपमानित करते थे तथा

---

आग को बुझावे। और वह तस्बीह पढ़ता है। और दाहिने-बायें उसके बहुत से फ़रिश्तें खड़े है। वह बोले महतर रअद है। ये दुनिया में पानी और बर्फ़ बरसाता है। यही इसका काम है। फ़िर वहाँ से गुज़र कर लब दरिया गया। और वहाँ से फिर आगे बढ़े, के देखा लोग कुछ ज़र्रत अत करते है। उसी वक़्त बोते है। और उसी वक़्त ज़र्रा अत तैयार होती है। और उसी वक़्त काटते हैं। और एक दाने के बदले सात सौ दाने उठाते हैं। फ़िर जिब्रील से मैने पूछा?

कहा, ये वे लोग है। कि जिन्होने कोशिश और मेहनत ख़ुदा की राह में की है। और लोगों की ख़िदमत महज ख़ुदा के वास्ते करते थे। हाजत मुहताजो की बर लाते थे। दिल और ज़ुबान से, इस वास्ते अल्लाह तआला ने उनकी रोज़ी में बरकत दी है। बआद इसके देखा कि चंद फ़रिश्तें आदमियों का सिर पत्थरों से कूटते है। दम-बदम इसी तरह होता है। मैने पूछा! जिब्रील यह कौन लोग है? कहा कि वह लोग है, कि वे तारिक-ए-जमाअत और पंजगाना नमाज़ पढ़ते सुस्ती करते थे। और नमाज़ वक़्त पर अदा नही करते थे। बआद उसके एक

माता-पिता से असभ्यतापूर्वक बातचीत करते थे।

इसी कारण इनके शरीरों से घृणित पदार्थ स्वरूप पीप-मवाद बह रही है एवं इनके चारो और अग्नि प्रज्वलित है, जो कि इनके शरीरों को जला रही है। जिसकी दुर्गंध से भी अत्यंत घृणा हो रही है।

अत: साथियों! हमें इन पाप के दूषित कार्यो से स्वयं को दूर रखना चाहिए। एवं निस्वार्थ परोपकारी कार्य करके परब्रह्म प्रियतम के अनंत प्रेम का पात्र बनकर अखण्ड जीवन रूपी मोक्ष को प्राप्त करने का प्रयास करके अमूल्य मानव तन को धन्य करना चाहिए। यही संसार की मर्यादा है, जैसा कि मुहम्मद साहिब ने अपनी कथनी, करनी एवं रहनी से एक नई राह प्रचलित की है। अत: हमें भी उसी सत्य मार्ग का अनुसरण करना ही चाहिए। जिससे कि हम भी महान बन सके।

इसके पश्चात मुहम्मद साहिब ने देखा कि कही से अत्यंत सुगन्धित शीतल, मनोहारी एवं प्रिय. मधुर ध्वनि आ रही है। शक्ति देव से पूछने पर

---

गिरोह देखा, कि फ़रिश्ते सब मानंद चार पायों के उनको हाँकते हुऐ दोजख़ के अन्दर ले जाते है। निहायत गरसंगी और तशनगी में काँटे ज़रीअ के और नजिस उनको खिलाते है। मैने पूछा, ये कौन है? कहा जिब्रील ने कि यह वह लोग है। कि इन सभी ने कुव्वत माल और सदका फ़ितर और क़ुरबानी अदा नही की थी। और हक़दार फ़क़ीर मुहताजों को नही दिया और उन पर रहम नही किया। फ़िर आगे बढ़े देखा कि मर्द और औरतें है। कि उनके आगे नेमतें तरह-तरह रखी हुई है। और दूसरी तरफ़ गोश्त मुर्दार और नजिस है। और वे सब नेमतें छोड़कर गोश्त मुर्दार और नजिस खाते है। और नेमत पाकीज़ा की तरफ़ नही देखते है। उन्हें देख के मुतहय्यर हो, जिब्रील से पूछा? कहा कि ये सब जोरू और ख़सम है। मर्द अपनी जोरू को छोड़कर और औरतें अपने शौहर को छोड़कर हरामकारी और बेहाली का काम करते थे। और कस्ब हलाल से नही खाते थे। चोरी और दग़ाबाज़ी और फरेब से खाते थे। और एक गिरोह को देखा, उनको आग के शोलों पर चढ़ाया है। वह सब चिल्ला रहे है।

उन्होने बताया कि यह ख़ुशबु अर्थात महक बैकुण्ठ धाम की है, जहाँ पर विभिन्न प्रकार की वनस्पति यथा- फ़ल-फूल, बेल-बूटे व अनमोल रत्नों से सुसज्जित गृह या कक्ष में अनमोल संपदाए है।

परब्रह्म प्रियतम का स्पष्ट निर्देश है कि जो कोई प्राणी भी मुझ पर एवं मेरे संदेशवाहक के स्वरूप पर पूर्ण विश्वास करके एक ही परब्रह्म का ध्यान अर्थात स्मरण करेगा। वह व्यक्ति निसंदेह ही अखण्ड धाम के आन्नद का रसपान दोनो लोको में अनंत काल तक करेगा। तारतम-

**निजानाम श्री जी साहिब जी, अनादि अक्षरातीत।**
**सो तो अब ज़ाहिर भए, सब विध वतन सहित।।**

एवं जो कोई भी मेरी इन अनमोल बातों पर पूर्ण विश्वास नही करेगा। उसको हम निश्चय ही दण्ड स्वरूप उसके दुष्टता रूपी अहंकार के कार्याकलाप के परिणाम स्वरूप को नर्को की अग्नि में जला कर नष्ट कर देंगे। तत्पश्चात् कृपापूर्वक स्वरूप उसको पुनः पवित्र करके अंतिम

---

जिब्रील से पूछा। बोले यह हाल उन सभी का है। कि बर-सर बाज़ार राह में बैठकर लोगो पर हँसते थे। और लिबास और शक्ल पर तानः और तसनीह करते थे। और लोगो के हँसाने के वास्ते नाम ख़राब लेकर पुकारते थे। और एक गिरोह को देखा। उनकी गर्दन पर इस क़द्र बोझ रखा है। कि गर्दन फ़िर नही सकती। और इस पर बोझ ज़्यादा किया जाता है। जिब्रील ने कहा कि इन लोगों ने अमानत में ख़्यानत की थी। और हक़ लोगों का इनकी गर्दन पर है। और एक गिरोह को देखा कि आग की मिक़राज़ से होंठ और ज़ुबान उनकी काटते है। कहा जिब्रील ने ये सब सबब तुम दुनिया के बादशाहो और अमीरो और दौलतमंदो की ख़ुशामद के वास्ते झूठी बात कहा करते थे। और ये सब वाइज़ थे। और आप अमल नही करते थे। बद-अम्ल करने के मुर्तकिब होते थे। फ़िर चंद आदमियों को देखा कि मुँह उनके स्याह और चश्म उनकी नीली और नीचे का होंठ पाँव पर और ऊपर का होंठ सिर पर और लहू और पीप

आठवीं (8) बहिश्त में अखण्ड करेंगे।

पुनः आगे जाने पर उन्होनें देखा कि एक मौत का देवता मृत्यु देव शंकर जी एक स्थान पर विराजमान है। उनके विशाल चार मुख मण्डल चारो और है। जिन्होंने अभिवादन का भी प्रत्युत्तर न दिया। जब उनको परब्रह्म का निर्देश पहुँचा तो उन्होनें प्रत्युत्तर देकर कहा! कि हे अंतिम अवतार! अब परब्रह्म के आदेश से मैं अवश्य ही आपको प्रत्युत्तर प्रदान करके संतुष्ट करने का प्रयास करूँगा। तब पैग़बर साहिब ने पूछा! कि आपको किस प्रकार ज्ञात होता है कि अमुक व्यक्ति का निधन होगा? तब मृत्युदेव ने उत्तर देकर कहा! कि यह जो वृक्ष प्रत्यक्ष रूप से मेरे सामने दिखाई दे रहा है इस पर प्रत्येक प्राणी के कर्मो का लेखा-जोखा लिखा है। अतः चालीस (40) दिन पूर्व जिस पत्ते का रंग पीला होना शुरू हो जाता है तो हमें मालूम हो जाता है कि इस प्राणी की मृत्यु निकट ही है। यदि वृक्ष का पत्ता दाईं दिशा में गिरता है तो वह प्राणी देवगणों के सम्मुख दया का पात्र

---

और निजासत उनके मुँह से बहती है। और गधो की तरह चलते है। जिब्रील ने कहा ये हाल नशा पीने वालो का है। और एक गिरोह को देखा। कि ज़बान उनकी नीचे की तरफ़ खैंच के निकाली है। और शक़्ल उनकी मानंद सूअर के है। अज़ाब आग में गिरफ्तार है। जिब्रील ने कहा ये हाल झूठी गवाही देने वालो का है। और एक गिरोह को देखा, कि पेट उनका फ़ूला हुआ मानंद गुंबद के और रंग इनका ज़र्द और हाथ-पाँव में आतिश-ए-ज़ंज़ीरे और गर्दनो में तौंक-ए-आतिश है। और साँप बंदो के पेट में अन्दर नज़र आते है। जब उठने का इरादा करते है। तो पेट के बोझ से गिर पड़ते है। और आतिश के अन्दर जलते है। जिब्रील ने कहा कि यह हाल सूद और रिश्वतखोरो का है। और एक गिरोह औरतो का देखा, उनके रू स्याह और आँखे नीली और आतिशी कपड़े पहने हुए है। फ़रिश्ते उनको आग के गुर्जों से मारते है। और वह मानंद कुत्तियों के चिल्लाते है। जिब्रील ने कहा कि वह औरतें है कि जो अपने शौहर की

बनता है। परन्तु यदि बाईं दिशा में गिरता है तो वह नि:संदेह परब्रह्म स्वामी के दण्ड का पात्र बनता है।

उन्होनें पुन: जानकारी चाही कि आपके चार (4) मुख होने का क्या कारण है? तब उसने उत्तर दिया कि सामने का मुख परब्रह्म के प्रताप से है। अत: इस मुख से हम परब्रह्म के प्रिय संयमी प्राणियों के प्राण इस प्रकार हरण करते है जैसे कि एक बालक अपनी माँ के स्तनों से दूध पीता है परन्तु माता को कष्ट का नही, बल्कि संतुष्टि के आन्नद की अनुभूति प्राप्त होती है।

इसके विपरीत पश्चिम का मुख कोध्र का प्रतिरूप है। अत: उसके द्वारा दुष्ट पापियों के प्राण कठिनतापूर्वक ऐसे निकालते है कि उसे अंतिम समय में अत्यंत कष्टों का अनुभव करना पड़ता है जिससे कि वह अपने दूषित कर्मों याद या स्मरण करके पश्चाताप कर सके।

तब पुन: आगे जाने पर एक देवता विष्णु देव ने आकर हमारा आदर-

---

नाफ़रमानी करती थी। और बिना हुक्म अपने शौहर के इधर-उधर फिरती थी। और अल्लाह तआला और रसूल के हुक्म मुताबिक काम नही करती थी। और एक गिरोह को देखा कि उल्टे हवा में लटके हुऐ है। और फ़रिश्तें बदशक्ल आग के गुर्जों से उनको मारते है। कहा यह हाल मुनाफ़िकों का है। और एक फ़िर्केंको देखा कि आग के जंगल में कैद है। और आग उनको सख़्त जलाती है। तमाम बदन में उनके जख़्म मानंद जज़ाम के है। जिब्रील ने कहा कि इन सभी ने अपने माँ-बाप की नाफ़रमानी की है और खाने-पीने और रहने के मकान के वास्ते उनको तकलीफ़ दी। और माँ-बाप से बे-अदबी करते थे। नाशाईस्ता गुफ़्तार कहते थे। और फ़िर वहां से आगे बढ़े के एक मैदान बहुत बड़ा विस्तृत देखा, कि इससे मुश्क बग़ैरा की ख़ुश्बु और साथ उसके एक आवाज़ आती थी। इस मजमून की, या इलाही! जो वायदा तूने मुझसे कहा है। पूरा कर जिब्रील से मैने पूछा कि यह बर-यह-ख़ुशबु और आवाज़ कहाँ से

सत्कार किया। उसके सत्तर हजार (70,000) शीश है एवं प्रत्येक शीश में सत्तर (70,000) मुख है तथा प्रत्येक मुख में (70,000) सत्तर हजार जिभ्याएं है। शक्ति देव से प्रश्न करने पर उन्होने बताया कि परब्रह्म इसके द्वारा समस्त प्राणियों को आजीविका अर्थात रोज़ी-रोटी प्रदान करवातें है। प्रत्येक प्राणी में इसका ही स्वरूप है।

फ़िर इसके पश्चात मैकाईल देवता अथवा ब्रह्मा जी के द्वारा हमारा अभिवादन-सत्कार किया गया। पुनः एक विशाल देवता को देखा। इसके भी चार मुख चार प्रत्येक दिशाओं में प्रत्यक्ष दिखाई दे रहे थे। एवं समस्त भूलोक की पृथ्वी आकाश उसके पैरों में घुटनों पर है। हमने उसको अभिवादन किया, तो उसने प्रत्युत्तर न दिया। तब परब्रह्म का आदेश आया कि ए ब्रह्मदेव! यह हमारा प्रिय मुहम्मद! है। अतः आप इनकों अभिवादन करके आदर-सत्कार पूर्वक इनके प्रश्नों का उत्तर प्रदान कीजिए।

तब उसने कहा कि जब से परब्रह्म स्वामी ने मुझे उत्पन्न किया है। तब

---

आती है? फ़रमाया यह ख़ुशबु और आवाज़ बहिश्त की है। नेमतें और मेवे रंग-बिरंगे और मकान सोने-चाँदी और याक़ूत और मरवारीद वग़ैरः से अल्लाह ने तैयार कर रखे है। और इसकी आवाज़ के जवाब में हक़ तआला फरमाता है। कि जो शख़्स ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाएगा। और क़ुरआन व हदीस के मुवाफ़िक चलेगा और शिर्क व विदअत से दूर है। और मेरी परस्तिश न करेगा और मेरे रसूल की तकज़ीब न करेगा। इस को तुझ में दाख़िल करूँगा और बहिश्त कहती है। बआद इसके एक मैदान में घुसे इसमें से बदबू और आवाज़ गरयः की आई। जिब्रील से पूछा उन्होनें कहा ये बदबू दोज़ख़ की है। और वह आवाज़ जंज़ीर-ए-तौक़ और साँप और कछुए वग़ैरह की है। और दोजख़ फ़रियाद करती है। या इलाही! वाअदा मेरा पूरा कर। जनाब-ए-बारी से हुक्म होता है कि जो शख़्स शिर्क और कुफ़्र और बिदअत करेगा और मेरी परस्तिश न करेगा। और मेरे रसूल सः की तकजीब न करेगा। उसको तेरे

से आज तक मुझे सृष्टि रचना के कारण से एक पल का भी अवकाश प्राप्त नही है। जिस कारण मैं आपके प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ था।

पुनः अगले द्वार पर पहुँचे तो देखा कि वहाँ मालिक अर्थात धर्मराज विराजमान है। यह उन्नीस (19) देवताओं के प्रमुख एवं नर्क का अधिकारी है। तब हमने उसको अभिवादन कहा, परन्तु उसने भी उत्तर न दिया। तब परब्रह्म के आदेश से उसने प्रत्युत्तर देकर हमारा उठकर आदर-सत्कार किया। हमने उससे जानकारी चाही कि आप नर्क का वर्णन कीजिए। तब उसने बताया कि नर्क सात (7) प्रकार का परब्रह्म स्वामी ने तैयार करवाया है। जिनमें निरंतर अग्नि प्रज्वलित रहती है। नर्क में सत्तर हजार (70,000) पहाड़ या पर्वत के स्थान है। प्रत्येक स्थान में सत्तर हजार (70,000) अग्नि के द्वार है। तथा प्रत्येक द्वार में सत्तर हज़ार (70,000) भवन है। प्रत्येक भवन में सत्तर हजार (70,000) कक्ष है। प्रत्येक कक्ष में सत्तर हजार (70,000) संदूक / मंजूषाएं है। एवं प्रत्येक

---

हवाले करूँगा और दोज़ख़ कहती है। या इलाही! मैं राज़ी हूं, फिर वहाँ से दूसरे आसमान के दरवाज़े पर गये। और दरवाज़े पर दस्तक दी। मलाईक ने पूछा! तुम कौन हो? कहा कि जिब्रील हूँ। और ये मुहम्मद हबीबुल्लाह है। उस वक़्त फ़रिश्तों ने दरवाज़ा खोला। और ताज़ीम व तकरीम से मुझको ले गये। और फ़रिश्तों का सरदार महतर मीकाईल है। उसने सलाम अलैकुंम कहा मुआनक़ा किया और कहा कि मरहबा! या रसूलुल्लाह! आपसे आसमान रौशन हुआ। फिर वहाँ से आगे बढ़े तो यहाँ पैग़ंबर और ईसा अलै॰ रूहुल्लाह ने आकर यह तआज़ीम तमाम कहने लगे। मरहबा या? अख़ अल सा सालेह व नबी अल सालेह फिर वहाँ से आगे बढ़े, देखा तो एक फ़रिश्ता महीयब शक्ल है। और उसके सत्तर हज़ार सिर है। और हर सिर में सत्तर हजार मुँह है। और हर मुँह में सत्तर हज़ार ज़बान। ये देख के मैने जिब्रील से पूछा। ये कौन है? कहा! कि यह क़ासिम है। कि उसके हाथ में तमाम मख़्लूकात की

मंजूषा अथवा बक्सें में सत्तर हजार (70,000) साँप-बिच्छु इत्यादि विषैले जीव जन्तु है।

यदि पृथ्वी लोक पर इनका एक कण मात्र: भी पहुँच जाए, तो समस्त पृथ्वी पर हा-हाकार उत्पन्न हो एवं सभी प्राणी, भवन, वृक्ष इत्यादि सांसारिक वनस्पति नष्ट हो जाए। दूसरे नर्क बर्फ से उत्पन्न है जो कि साल में दो बार स्थिति परिवर्तन करके ऋतु-परिवर्तन का कारण बनती है। नर्क की इन भयंकर भयभीत करने वाली बातें सुनकर आप मुहम्मद साहिब उदास हो गए एवं सातवें (7) अर्श या आकाश लोक के द्वार पर पहुँचे तो वहाँ देखा कि बहुत से देवगण परब्रह्म की स्तुति गान एवं साधना में तल्लीन है।

समस्त देवों ने उठकर मुहम्मद साहिब का स्वागत-सत्कार एवं अभिवादन किया। पुन: आगे जाने पर उन्होने देखा कि प्रत्येक दिशा में दिव्य अलौकिक आभा प्रकाशमान हो रही है। शक्तिदेव ने बताया कि यह

---

रोज़ी हक़ तआला ने सुपर्द की है। हर रोज़ वक़्त जिस क़द्र अल्लाह तआला ने अंदाजा किया है। उसी क़द्र लोगो को पहुँचाता है। फ़िर वहाँ से तीसरे आसमान के दरवाज़े पर पहुँचे। वहाँ महतर माईल सब फ़रिश्तों के सरदार है। उन्होने आकर अस्सलामं-अलै कुमं मरहबा या रसूलुल्लाह कह कर मआनका किया। फिर वहाँ से आगे बढ़े, युसूफ़ अलै० ने आकर मुझसे मुलाकात की और कहा मरहबा या नबी अस्सालेह ! फिर वहाँ से चौथे आसमाँ पर पहुँचे। सरदार फ़रिश्तों के इस दरवाज़े में मअताईल है। उन्होंने आ के मुझसे मआनका किया। फिर वहाँ से आगे बढ़े और उससे मुलाकात हुई। और उन्होने कहा मरहबा या नबी अस्सालेह फ़िर जब वहाँ से आगे बढ़े देखा कि एक फ़रिश्ता हैबतनाक है। और हर तरफ इसके फ़रिश्तों सब खड़े है। और चार मुँह उनके थे। और दाहिना हाथ उनका मग़रिब में और बायाँ हाथ उनका मशरिक़ में है। और आसमान व ज़मीन में उनके दोनो पाँव के टख़नो पर है।

महाविष्णुदेव का ज्योति स्वरूप है जो कि बैकुंठक्षर धाम के स्वामी है। तब उन्होने प्रणाम कहकर स्वागत सत्कार किया फिर परब्रह्म का निर्देश आया कि नर्क के निरीक्षक यमराज ने मेरे प्रिय मुहम्मद! को नर्को की भयंकर बातों से विचलित कर दिया है।

अतः आप इन्हे बैकुण्ठ की अदभुद आननदित वस्तुएं दिखा कर प्रसन्न करो। तो उसने कहा कि ए अंतिम अवतार! सर्वप्रथम आपका समुदाय ही इस अखण्ड बैकुण्ठ धाम के आन्नद की अनुभूति प्राप्त करेगा। इसके पश्चात उनको बैकुण्ठ के आन्नददायक उद्यानो की भ्रमण करवाई। वहां पर आकाशवाणी आई कि हमने आपके समुदाय के लिए बैकुंठ धाम से भिन्न एक बहिश्त अखण्ड धाम की रचना करवाई हुई है। जिसमें वह अनंत काल तक आन्नद पूर्वक निवास करेंगे।

इसके पश्चात आपने बेहद भूमि अर्थात गोलोक धाम में प्रवेश किया। यहां पर श्रीकृष्ण जी की बाल लीलाएं एवं किशोर स्वरूप की रास लीलाऐं

---

और सामने इनके लिए एक तख्त अज़ीम है। जिब्रील अलैहिस्सलाम से मैने पूछा ये शख़्स कौन है? कहा या रसूलुल्लाह ये महतर इज़राईल है। तब मैं उनके सामने गया। और कहा अस्सलाम अलै कुंम या मल्कुलमौत! जवाब सलाम मेरे का न दिया। उस वक़्त हुक्म हुआ। ऐ इज़राईल! जवाब सलाम का मेरे हबीब को दे और जो कुछ तुझ से पूछे जवाब उसका बख़ूबी दे। उस वक्त इज़राईल ने सर उठा के कहा व अलै कुम सलाम या हबीबुल्लाह! और मआनका किया। और ताज़ीम व तर्क्रीम से नजदीक अपने बिठाया। और कहा या रसूलुल्लाह! जब से मुझे अल्लाह ने पैदा किया है। तब से बहुत काम ख़ल्क़ के मुझे सुपुर्द किऐ है। एक लहज़े की फ़ुरसत मुझे नही है। कि किसी से बात करूँ, आज मुझ पर हुक्म अल्लाह का हुआ इस वास्ते आप से बात करता हूँ। मैने कहा ए इज़राईल रूह को किस तरह क़ब्ज़ करते हो। उन्होने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे सामने ये जो दरख़्त है। उसके पत्तों के शुमार के मवाफ़िक़ है। और हर एक ख़ल्कुल्लाह का नाम उस पत्तें

क्रमशः बाल-मुकुंद एवं बांके बिहारी के स्वरूप में अखण्ड है। वहां पर अत्यंत बहुमूल्य नग-मणियों से सुसज्जित भवन है जिनके आँगन सफेद उज्जवल जगमग मोतियों से निर्मित है। इस स्थान पर भी आप परब्रह्म की स्तुति गान एवं ध्यान करके आप आगे बढ़ गए।

इसके पश्चात मुहम्मद साहिब सिद्र तुल मुंतहा अर्थात अक्षर धाम में एक बेर वृक्ष के समीप पहुँचे तो शक्ति के देवता ने कहा कि ए परब्रह्म स्वामी के प्रिय! अब आप अकेले ही आगे परमधाम में चले जाए क्यों कि मैं परब्रह्म के निर्देश अनुसार इस धाम की सीमाकंन में इस स्थान से आगे नही जा सकता हूँ। तब मुहम्मद साहिब ने कहा कि मेरे निर्देश से साथ चलें। तो फरिश्ते ने कहा कि यदि मैं आगे चलूगा, तो परब्रह्म का तेज अर्थात आभा मेरे पंखों को जलाकर नष्ट कर देगा। अतः आप मेरे लिए परब्रह्म से मेरे लिए प्रार्थना कीजिए एवं महाप्रलय के समय से सबंधित निर्देश ले लीजिए?

---

पर लिखा हुआ है। मौत क़रीब होती है। चालीस रोज़ आगे रंग उस पत्ते का जर्द हो जाता है। और मौत के रोज़ पत्ता गिरता है। और उस पत्ते पर निगाह रखता हूँ। अगर वह बन्दा अहल-ए-रहमत में से है। तो दाहिनी तरफ के मलाइक-ए-रहमत में से है। और अगर वह बंदा लानत में से है। तो बाई तरफ़ के मलाईक-ए-अज़ाब को भेजता हूँ। फ़िर मैने पूछा! ए इज़राईल हक़ीक़त रूह की बयान करो? रूह क्या चीज़ है? उन्होने कहा या रसूलुल्लाह! मैं नही जानता हूँ। कि रूह क्या चीज़ है। लेकिन वक़्त-ए-कब्ज़ के एक बोझ सा मेरी हथेली पर मालूम होता है। फ़िर पूछा मैने! कि तुम्हारे चार मुँह होने की क्या वजह है? कहा या रसुलुल्लाह! सामने का मुँह जो नूर से है। इससे मोमिनो की अरवाह क़ब्ज़ करता हूँ। और दाहिनी तरफ़ का मुँह जो गुस्से से है। इससे जान गुनाहगारों की कब्ज़ करता हूँ। और बाई तरफ़ का मुँह जो कहर से है। उससे मुनाफ़िक़ो की रूह कब्ज़ करता हूँ। और पीछे का मुँह जो दोज़ख़ की आग से है। इस से जान मुश्रिक़ों की और काफ़िरो की लेता हूँ। फ़िर कहा या

चौपाई-

**कई ज़ोर किया ज़बराईल, आया एक कदम मुहम्मद खातिर।**
**तो भी आगू आए न सकया, कहे जले हक़ के नूर से मेरे पर।।**

तब फ़िर वहाँ से मुहम्मद साहिब को अस्राफील फरिश्ता अर्थात जाग्रत बुद्धि का देवता बुद्धिदेव जमुना अथवा यमुना नदी के तट पर स्थित पुल के निकट तक ले गए। वहाँ पर परब्रह्म प्रियतम ने नूरी, इश्क़मयी, अलौकिक, दिव्य, अनन्य, प्रेममयी, सुखपाल भेजा जिसमें बैठकर वह अकेले ही परमधाम के मूल-मिलावे में पहुँच गए। वहां पर परब्रह्म के नूरी इश्क़ का वह तेज अर्थात शक्तिपुंज है। जिसको प्रियतम ने अपने नूर जमाल अर्थात दिव्य अलौकिक सुंदरतम शक्ति से उत्पन्न किया है। वह सत्तर हजार (70,000) पर्दो का एक ऐसा आवरण है। कि इस एक आवरण में ही पाँच सौ (500) वर्ष की राह है। जो मन, चित, बुद्धि, अहंकार रूपी इत्यादि मिथ्या मानव शरीर से रहित है। यह सत्तर हज़ार

---

रसूलुल्लाह ! सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपको ये जो ख़ुशख़बरी देता हूँ, कि जिस दिन से अल्लाह ने मुझको पैदा किया है। उस दिन से फ़रमान हक़ का मुझ पर यूँ हुआ है। कि जान उम्मत-ए-मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्ल० की इस आसानी से निकालता हूँ जैसे सोता हुआ लड़का दूध माँ की पस्तान से खैंचकर पीता है। और माँ को कुछ ज़र्र नही पहुँचता है। ये बात सुनकर मैं सज्दा शुक्र का बजा लाया, फ़िर पूछा ए इज़राईल कभी तुमको इस कुर्सी से उठने की नौबत पहुँची है ! या नही? कहा या रसूलुल्लाह ! सल्ललाहु अलैहि वसल्लम तीन मर्तबा उठने की नौबत पहुँची है। पहली मर्तबा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के जिस्म बनाने के लिए मिट्टी लाने को और दूसरी मर्तबा हज़रत आदम की रूह कब्ज़ करने को और तीसरी मर्तबा मूसा की रूह कब्ज़ करने को, फ़िर पूछा मैने इज़राईल से रूह कब्ज़ करते हुऐ कभी किसी पर रहम किया था ! या नही? कहा या रसूलुल्लाह सल्ल० दो शख़्स के लिए मैने बहुत ग़म किया था। पहले एक औरत के वास्ते कि वह दरिया में किश्ती पर

(70,000) इंद्रियों द्वारा संचालित मिथ्या मायावी तन से भिन्न गुणातीत, अखण्ड, अनंत, अलौकिक, शब्दातीत अद्वैत स्वरूप है। इसकी उपमा व कल्पना रूपी तुलना संसार के किसी भी भौतिक पदार्थ से नही हो सकती है। क्योंकि सांसारिक पदार्थ मिथ्या व परिवर्तनशील है जबकि परब्रह्म प्रियतम स्वामी अपने परमधाम में सत्य, चेतन एवं आन्नदमयी है। अर्थात सच्चिदानंद स्वरूप है। चौपाई-

**इन विध देने ईमान, उपजावने इश्क़।**
**सो इश्क़ बिना न पाइए, ए जो नूर तजल्ला हक़।।**

अत: सिद्ध है कि परब्रह्म का परमधाम माया जगत के प्रपंच से भिन्न है। वहां पर माया के दु:ख का द्वैत नही, अखण्ड, अनंत, आनन्द की स्वलीला अद्वैत है, इसलिए मिथ्या माया तन रूपी द्वैत का वहां परमधाम के अद्वैत में प्रवेश कठिन ही नही, बल्कि असंभव है। इसलिए परमधाम से आत्माए संसार में अवतरित हुई। इसी कारण ही प्रियतम परब्रह्म को हृदय

---

सच से बनी थी। बआद उसके उसकी जाँ क़ब्ज़ करने का हुक्म हुआ। और दूसरी मर्तबा शद्दाद मलऊन की जान क़ब्ज़ करने पर जब उसने चार सौ बरस की मुद्दत में बाग़-ए-इरम बनाया और उसके देखने के वास्ते एक पाँव उसका चौखट के बाहर और दूसरा पाँव चौखट के अन्दर था। उस वक्त जान उसकी क़ब्ज़ हुई। पस वह शद्दाद बादशाह बीस लाख फौज़ के साथ वही हलाक हुआ। और अपनी बनाई हुई बहिश्त देखने ना पाया। फ़िर वहाँ से आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाँचवे आसमान के दरवाज़े पर गये। उस दरवाज़े पर महतर आमाईल अलै॰ सब मलायका के सरदार है। उन्होने आ के मरहबा कह के मुझसे मआनका किया। फ़िर वहाँ से मैं आगे बढ़ा। हारून अलैहिस्सलाम से मुलाकात हुई। उन्होने कहा मरहबा या अस्सालेह फ़िर वहाँ से छठे आसमान के दरवाज़े पर तशरीफ़ ले गये! वहाँ महतर हाईल अलै॰ सब फ़रिश्तों के सरदार थे। उन्होने भी आ के मरहबा या रसुलुल्लाह! सल्ल॰ कहा

में धारण करने हेतु केवल चितवन ही वह सरल, सुगम, सहज मार्ग है, जिसके द्वारा प्रियतम का साक्षात्कार संभव हो सकता है अन्यथा किसी अन्य सांसारिक साधना या भक्ति मार्ग से परब्रह्म प्रियतम के अद्वैत इश्क़मयी अनन्य प्रेम की प्राप्ति नही हो सकती।

परमधाम में चितवन के द्वारा सूरता अपने मूल संबध से जुड़ जाती है। चितवन में प्रियतम परब्रह्म से अटूट प्रेम को आत्मसात करके प्रियतम का साक्षात्कार होता है। इसको ही सहज मार्ग अर्थात योग की चरम अवस्था कहते है। इसके आन्नद में ही ''अनल हक़'' अर्थात अहं ब्रह्मास्मि की अवस्था को पहुँचा जा सकता है। जो कोई इस परम पद को पा लेता है, वही जाग्रत होकर दोनो लोकों (परलोक एवं संसार) में आनंद की अनूभूति सहज ही प्राप्त कर लेता है। इसी पद की प्राप्ति की कामना हेतु प्रयास करने के लिए सरदार महंमत रूहुल्लाह प्राणनाथ श्री जी साहिब जी ने सहज साधना मार्ग से अनन्य प्रेम को आत्मसात करने का निर्देश दिया है।

---

और मआनका किया। फिर वहाँ से आगे बढ़े मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाकात हुई और कहा मरहबा या नबी अस्सालेह! फिर हज़रत मूसा ने कहा या रसुलुल्लाह जो हक़ तआला की तरफ़ से आपकी उम्मतों पर फ़र्ज़ किया जावे, आप समझ के कबूल कीजिऐगा। किस वास्ते कि आपकी उम्मतों की उमर थोड़ी है। और वह बहुत जईफ़ और नातवाँ है। फ़िर आं हज़रत स॰ वहाँ से आगे बढ़े एक फ़रिश्ता हैबतनाक देखा कि जिसके बमर्जद देखने के अक़्ल और होश गुम जावे। और ऐसा कि उसके दाहिनें मोंढ़े से बांई मोंढ़े तक बरस दिन की राह है। और बहुत फ़रिश्तें बदसूरत गिर्द-अ-गिर्द उसके हाज़िर है। आँ हज़रत स॰ ने पूछा या जिब्रील यह कौन फ़रिश्ता है। कहा या रसूलुल्लाह! स॰ उसका नाम मालक है। यह उन्नीस फ़रिश्तो का सरदार है। और दोज़ख़ का दारोगा है। जिस तरह हुक्म-ए-इलाही होता है। उसी तरह बजा लाता है। तब आँ हज़रत स॰ उसके पास गए, और सलाम अलै कुंम कहा, सलाम ना उसने जवाब न दिया, हुक्म हुआ, ए मालक! यह हज़रत मुहम्मद

यथा–

**''इतही बैठे घर जागे धाम, हुए पूर्ण मनोरथ सब काम''**

यदि कोई परम अद्वैत इश्क़ को पा लेता है, तो वह परब्रह्म की अलौकिक आभा के प्रताप से आत्मसाक्षात्कार करके अद्वैत प्रेम को दिल में बसाकर परम धाम की पूर्ण सत्ता का आत्म साक्षात्कार करने का पात्र बनके आत्म जागृति के लक्ष्य को सहज ही पाकर जिज्ञासु, ह्रद्वय में स्थित प्रियतम से मिलन करके परमधाम की एकदिली अर्थात अद्वैत के अखण्ड परमपद को प्राप्त कर लेता है। जिससे साधक को ''अहं ब्रह्मस्मिं'' की शोभा प्राप्त हो जाती है। इसको ही सूफी संत ''अनल हक़'' के नाम से पुकारते है। यहां पर पीर मुर्शद अर्थात सदगुरू की परब्रह्म के समानांतर स्वीकार्यता भी बनती है, जिससे कि साधक की साधना को साध्य के रूप में परब्रह्म की कृपा से सदगुरू की प्राप्ति होती है। जिससे वह सदगुरू को प्रसन्न करके ही परब्रह्म की आभा का साक्षात्कार कर सकता है। यद्यपि इश्क अर्थात

---

मुस्तुफ़ा ख़ातम उल–अंबिया मेरे हबीब है। उनको जवाब सलाम का ना दिया। और ताज़ीम क्यो न की? तब मालक आँ हज़रत स॰ का नाम सुनकर उठा। और ताज़ीम व तकरीम से बैठाया। और कहा मरहबा या रसुलुल्लाह! हक़ तआला ने तमाम अंबियाओं पर आपको अफ़ज़ल किया है। और तमाम पैगंबरों की उम्मत तुम्हारी उम्मत की पैरवी करेगी। फ़िर आँ हज़रत ने पूछा ए मालक माहीयत दोज़ख़ की बयान कर ताकि ख़बरदार रहूँ। कहा या रसुलुल्लाह! आप को देखने और सुनने की ताक़त ना होगी? इतने में बारगाह–ए–इलाही से हुक्म आया। ए मालक! जो कुछ मेरा हबीब! तुझसे पूछे, उसको तू अच्छी तरह बयान कर। तब मालक ने कहा या रसूलुल्लाह! दोज़ख़ सात तरह की अल्लाह तआला ने अपने ग़ज़ब से पैदा की है। और तों व अर्ज़ हर एक का मानिंद ज़मीन व आसमान के है। और उसमें आतिश गुनागुन अल्लाह तआला ने पैदा की है। और दरम्यान एक दोज़ख़ के सत्तर

अनन्य प्रेम को परब्रह्म ने अपनी अलौकिक दिव्यता से उत्पन्न किया है। अत: यह पूर्ण मिलन आत्म-साक्षात्कार की चरम अवस्था नही है। इसीलिए यह सच्चिदानंद परब्रह्म के पूर्ण ब्रह्म स्वरूप से भिन्न है। क्योंकि इश्कमयी अनन्य प्रेम साधन है। साध्य नही है। मूलत: साधक का साध्य अर्थात वास्तविक ध्येय तो पूर्णब्रह्म सच्चिदानंद परब्रह्म प्रियतम स्वामी से मिलन करके एकीकरण होना होता है। इसी अवस्था को वैदिक धार्मिक ग्रंथों में 'अहं ब्रह्मास्मिं' तथा सामी धर्मग्रन्थों में 'अनल हक़' अर्थात परमधाम में सर्वस्व नूरमयी दिव्य अलौकिक एकदिली है।)

श्री जी ने योगियों के हठ मार्ग पर अग्रसर न होने का भी आहवान किया। क्योंकि योग की कठिन साधना में शरीर की तो शुद्धि होकर सिद्ध की अवस्था प्राप्त हो जाती है जिससे अहं के वशीभूत हो जीव को मिथ्या अभिमान हो जाता है। परन्तु प्रियतम स्वामी का अलौकिक अनन्य प्रेम प्राप्त नही हो सकता। जबकि अनन्य प्रेम, इश्क़ के द्वारा प्राणी सहज रूप में

---

हज़ार पहाड़ आग के है। और हर पहाड़ के सत्तर हज़ार दरवाज़ें आग के है। और हर महल में सत्तर हज़ार मकान आग के हैं। और हर मकान में सत्तर हज़ार कोठरियाँ आग की है। और हर कोठरी में सत्तर हज़ार संदूक़ आग के है। और हर संदूक़ में सत्तर हज़ार साँप और बिच्छु आग के है। और वह आग है। कि अगर एक ज़र्रा उससे रू-ए-ज़मीन पर पहुँचे। तो तमाम आदमी और पहाड़ और दरख़्त बग़ैरह: को भस्म कर डाले। मआज़ल्लाह या रसूलुल्लाह! जैसे मकानात और मैदान और पहाड़ वगैरह: मैंने ज़िक्र किऐ वैसे ही हर एक दोज़ख़ के अन्दर है। और एक दोजख़ बर्फ़ से पैदा की है। या रसूलुल्लाह हर साल दो मर्तबा दोज़ख़ अपनी साँस छोड़ती है। इस वास्ते छ: महीने सर्दी और छ: महीने गर्मी दुनिया में होती है। और इसी तरह गुनागुन अज़ाब ज़िल्लत का बयान किया, पस रसूल-ए-ख़ुदा यह सुनके बहुत ग़मगीन हो के सातवें आसमान के दरवाज़े पर गये। देखा वहाँ बहुत से फरिश्तें इबादत में मशग़ूल

आवागमन के चक्रव्यूह से निकलकर सरलता पूर्वक मोक्ष प्राप्त कर लेता है। इसी अवस्था की कामना पैंग़बर ईसा मसीह, मुहम्मद साहिब द्वारा प्रतिपादित सूफ़ी साधना के रूप में की गई है। यह मार्ग आधुनिक भौतिक सूफ़ियों के मार्ग से भिन्न है। क्योंकि आधुनिक सूफ़ियों ने आडम्बरों के मिथ्या प्रपंच में उलझकर मूल सूफ़ीवाद के त्याग, सर्मपण की अवधारणा का अस्तित्व ही संकटग्रस्त कर दिया है। जबकि वास्तविक अनन्य प्रेम इश्क़मयी साधना की इस अवस्था में जात-पात, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, राजा-रंक, रिश्ते-संबधियों का बंधन सुगमता से छूट जाता है। तथा साधक व साध्य में एकीकरण होकर साधक को आत्मसाक्षात्कार हो जाता है। यही अनन्य प्रेममयी सूफ़ी साधना का अध्यात्मिक रहस्यवाद है। जो कि हज़रत मुहम्मद अली व असाबा से सीना ब सीना द्वारा प्रतिपादित परम्परा से होते हुए, हज़रत अब्दुल कादिर ज़िलानी, ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, शेख़ निजामुद्दीन औलिया, शेख अहमद सरहिंदी वारिस शाह, बुल्ले शाह, साई

---

हैं। ये मुशाहिदा करके बहुत ख़ुश हुए। और वहाँ से आगे बढ़े। कि हज़रत इब्राहिम से मुलाकात हुई। उन्होने कहा मरहबा या नबी अस्सालेह! और फिर वहाँ से जब आगे बढ़े। तो देखा एक फ़रिश्ता नेक ख़ुश ख़ुल्क-ए-अज़ीम अल-शान कुर्सी पर बैठा है। और हर चार तरफ़ उसके नूर चमकता है और चुप रास्त चारो और उसके बहुत फ़रिश्तें नेक सूरत जमा है। जिब्रील ने कहा या रसूलुल्लाह! सल्ल० इस फ़रिश्तें का नाम रिज़वान है। और यह दारोगा बहिश्त का है। तब हज़रत स० सामने उसके तशरीफ़ ले गऐ। और कहा अस्सलामं अलै कुंम रिज़वान-उल-जन्नत उसने जल्द जवाब सलामक कहकर मुआनका किया। और कहा मरहबा या हबीबुल्लाह! इतने में अम्र-ए-इलाही हुआ। ए रिज़वान! मेरे हबीब को मालक ने दोज़ख़ की बातें सुनाकर ग़मगीन किया है। तू उनको बहिश्त की बातें सुनाकर खुश कर। तब रिज़वान ने कहा! या रसूलुल्लाह! सना और सिफ़्त आपकी हक़ तआला ने

मिंया मीर, शेख़ अली व अन्य औलियाओं से होते हुए आज भी जन-साधारण में मान्य अर्थात् स्वीकृत है। इसी को अफलातूनी इल्म अर्थात अद्‌भुद ज्ञान एवं अनन्य प्रेम-इश्क़ साधना मार्ग के नाम से भी जाना जाता है। इस साधना में मूलत: कर्म बंधन, धार्मिक क्रिया कलापो से रहित वास्तविक अध्यात्मिक आन्नद की प्राप्ति संभव हो पाती है। क्योंकि इस पद्धति में द्वैत का नही अद्वैत का भाव समाहित है।

तब वहां मुहम्मद साहिब ने भी परमधाम के मूल मिलावें में परब्रह्म प्रियतम का साक्षात्कार करने से पूर्व देखा कि परमधाम में परब्रह्म के सिंहासन के समीप तीन सौ तेरह (313) सिंहासन है। जिनमें से एक (1) सिंहासन एक भिन्न दिशा में एवं तीन सौ बारह (312) सिंहासन दांई विपरीत दिशा में है। जब उन्होने प्रियतम से इसका कारण जानना चाहा तो निर्देश मिला, कि समस्त ब्रह्माण्ड के अवतारों के लिए दांई दिशा के तीन सौ बारह (312) सिंहासन है। एवं आपके लिए एक सिंहासन विपरीत बांई

---

क़ुर्आन मजीद में फ़रमाई है। उम्मत आपकी और पैंगबरो के पहले बहिश्त में दाख़िल होगी। ये कहकर हज़रत का दस्त-ए-मुबारिक पकड़ कर जन्नत-उल-फ़िरदौस में वास्ते सैर करने बाग़ों के ले गऐ। तब आँ हज़रत स॰ अक़ाम-अक़ाम तरह-तरह की नेमतों से आगाह हुऐ। तब एक आवाज़ ग़ैब से आई ए हबीब! मेरे, तेरी उम्मत के वास्ते यही सब नेमतें बहिश्त की हमने तैयार रखी है। उम्मत तेरी अब्द-अल-आबाद बहिश्त में ख़ुश व महफ़ूज़ मुअज़िज़ व मुर्करम रहेगी। तब आँ हज़रत सरवर-ए-कायनात शुक्र क़ाज़ी-उल-हाजात का बजा लाकर आगे बढ़े। और बैतुल कसा में पहुँचे। अल्लाह तआला ने बैतुल कसा को याक़ूत और मोती और जमरूद सब्ज़ से बनाया है। इसमें तेरह सतून याक़ूत सुर्ख़ के है। और सहन उसका मोती का है। और इस जगह दो रक़अत नमाज़ हज़रत स॰ ने फ़रिश्तों के साथ पढ़ी, इतने में तीन प्यालें भरे हुऐ, शराब और सीर और शहद से हक़ तआला के हजूर से पहुँचे

दिशा में इसलिए विराजित शोभायमान है। क्योंकि न्याय दिवस के दिन दांई दिशा की तरफ़ से ही समूह संगत नर्को में से निकलेगी। तब आप जिसकी प्रशंसा करेंगे वह प्राणी सहज ही अखण्ड मुक्ति पद की अवस्था को प्राप्त कर लेगा। उस समय कोई भी पैंग़बर या अवतार, पीर अर्थात गुरू अपने अनुयायियों की स्वयं मदद करने में सार्मथ्यवान नही होंगे। एवं वह अपने समस्त अनुयायियों को परब्रह्म की शरणागत होने के लिए ही निर्देश देंगे। जिससे कि समस्त प्राणी भी नर्को की अग्नि से सहजतापूर्वक मोक्ष पा सकेंगे। तब ही समस्त जन साधारण अपने कर्मो का पश्चाताप करके परब्रह्म की शरण में आएगें। तो एक अद्वैत परब्रह्म की संसार में पहचान न कर पाने के कारण उनको नर्को की अग्नि में जलकर पश्चाताप करना होगा। पुनः समस्त प्राणी परब्रह्म के प्रेम दया के पात्र बन कर मोक्ष प्राप्त करके अखण्ड होंगे।

फिर मुहम्मद साहिब को निर्देश हुआ कि ए मेरे प्रिय! मेरे और समीप

---

और एक रिवायत में आया है। कि चौथा प्याला पानी का भी भेजा। तब जिब्रील ने अर्ज़ की, या रसूलुल्लाह! सल्ल० इनमें से जो आपकी ख़्वाहिश है। क़बूल कीजिए। तब आं हज़रत सल्ल० ने प्याला सीर का पिया तब सब फ़रिश्तों ने आफ़रीन कहा और कहने लगे या हबीबुल्लाह! अगर आप प्याला पानी का इख़्त्यार करते, तो सब उम्मत आपकी पानी में गर्क़ होती। और अगर आप प्याला शराब का इख़्त्यार फ़रमाते तो सब उम्मत आपकी नशें में मशग़ूल होती। अगर प्याला शहद का इख़्त्यार करते तो सब उम्मत आपकी दुनिया की लज़्ज़त में मुस्तग़र्क़ होती, लेकिन आपने दूध का प्याला क़बूल फ़रमाया, लिहाजः आपकी उम्मत आफ़त परेशानी व बला से दुनिया की निजात पावेगी, लेकिन थोड़ा सा दूध जो आपने प्याले में छोड़ा है। इस सबब से छोड़ा कि गुनाह आपकी उम्मत में बाक़ी रहा। तब आँ हज़रत स० ने चाहा कि जो दूध बाक़ी रहा है। उसको भी पी जाए जिब्रील ने अर्ज़ किया, अगर आप इस वक़्त

आईए। प्रत्येक बार निर्देशानुसार अत्यंत निकट होते हुए, उन्होने भी उसी कालीन पर अपना पवित्र चरण रखा, जिस पर परवरदिगार अर्थात प्रियतम परब्रह्म स्वामी का सिंहासन विराजमान है।

अंतत: वह प्रियतम स्वामी के निंतात समीप पहुँच गए। इतने समीप कि उनकी साँसे एक समान ही महसूस हो रही थी, एवं घुटने उनके स्पर्श हुए थे। अर्थात् एक दिली हो गए। चौपाई

**हुकम लेकर आइया, तब नाम धराया गैन।**
**हुकम बजाए पीछे फिरया, तब सोई ऐन का ऐन।।**

जब मुहम्मद साहिब परमधाम के मूल मिलावें में परब्रह्म प्रियतम के नितांत अत्यंत निकट विराजमान थे। तो वहां का नूरमयी आभामण्डल देखकर अत्यंत मुग्ध हो गए एवं अपना शीश झुकाकर सज़्दा अर्थात समर्पण स्वरूप अनंत अनन्य प्रेममयी आन्नद प्राप्त किया।

पुन: आवाज़ अर्थात मधुर ध्वनि का संबोधन आया कि ऐ प्रिय! हमारे

---

पीं गए तो कुछ मुफ़ीद न होगा। अब जो कुछ हुआ सो हुआ। हुक्म-ए-इलाही रद नही हो सकता है। पस आँ हज़रत स॰ ग़मगीन होकर वहाँ से सिद्र तुल मुंतहा को, जो जिब्रील के रहने की जगह है। पहुँचे, पैग़ंबर-ए-ख़ुदा बुर्राक से उतरे और जिब्रील वहाँ से रूख़सत हुऐ। और कहा कि मेरा मकाम यहाँ तक था। अब आप आगे तशरीफ़ ले जाऐ। और मुझको एक सरे मो आगे जाने का हुक्म नही।

**बैत ( छंद )**

**''अगर यक सरे मोए बर तर परम,**
**फ़रोग ए-तजल्ली ब सोज़द परम''**

हज़रत स॰ ने फ़र्माया ए अख़ी जिब्रील! मुझको यहाँ तन्हा छोड़ के जाओगे? कहा या हबीबुल्लाह! और दूसरे फ़रिश्तें आगे आप को यहाँ से ले जाऐंगे। आप रंजीदा ख़ातिर ना हुजिए और मेरी एक इल्तमास है। आप जनाब बारी में अर्ज़ कीजिए। और मेरे हसब ख़्वाहिश जवाब लीजिए। हज़रत स॰ ने

लिए क्या भेंट लेकर आए हो? तब उन्होने जवाब दिया कि हम संयम एवं एकदिली अर्थात् अद्वैत का अलौकिक अन्नय प्रेम लेकर आए है। तब परब्रह्म ने कहा कि ए मेरे ही सत्य स्वरूप! आप धन्य है। फिर उनको इस नूरी इल्म अर्थात ब्रह्मज्ञान रूपी इल्में लदुन्नी या तारतम के भेद रहस्य आशय प्रकट हो गए। अर्थात उनके अंतर्चक्षु जाग्रत हो गए।

फ़िर, पुनः उनको बताया गया कि हमने संसार में अठ्ठारह हज़ार (18,000)प्रकार के प्राणियों की संरचना करवाई है जिनमें से छः हजार (6,000) प्राणियों की उत्पत्ति जल में, एवं खुश्क स्थल स्थान पर बारह हज़ार (12,000) प्राणियों की प्रजातियां है। तथा सूर्य, चंद्रमा एवं तारें, स्वर्ग-नर्क इत्यादि आपसे अनंत अनन्य प्रेम के कारण बनवाए हैं। यद्यपि परब्रह्म प्रियतम स्वामी स्वयंमेव पूर्णब्रह्म है। जबकि मनुषय इत्यादि समस्त सांसारिक वस्तुए अपूर्ण है, परन्तु संसार परब्रह्म की रचना होने के कारण पूर्णब्रह्म का स्वरूप मात्र ही है। अन्यथा संसार रूपी मृत्युलोक में समस्त

---

फ़र्माया कहो क्या है? तब जिब्रील ने कहा या रसूलुल्लाह! मुझको आरज़ू है कि क़ियामत के दिन अपने परों को पुलसिरात पर बिझाऊँ और आपकी उम्मत को सलामत पार उतारू। इतने में इस्राफ़ील अलै० तख़्त-ए-नूरानी लेकर हुक्म-ए-इलाही से आऐ। जिसको रफ़-रफ़ कहते है। उसको नूर से अल्लाह ने पैदा किया और सत्तर हज़ार पर्दे जवाहरात के थे। मसाफ़त एक-एक पर्दो की पाँच सौ बरस की राह थी। आख़िर राह तय करके मक़ाम-ए-रफ़-रफ़ में जो इस्राफ़ील की जगह में पहुँचें और अर्श ने जल्दी वहाँ से उठा लिया। बैत

**''जो रफ़-रफ़ शुद मुर्शरफ अज़ बजूदशु**
**गिरफ्त अज़ दस्त रफ़-रफ़ अर्श जजूदश''**

खिताब आया जनाब बारी से ए हबीब! आगे आओ और हज़रत ने चाहा कि नआलैन पाँव से उतारे, तब अर्श मजीद जुंबिश में आया, व हुक्म हुआ। ए हबीब नआलैन मत उतारो मय नआलैन अर्श पर आओ। तो अर्श में जनाबे क़रार ने अर्ज़ की या इलाही! मूसा अलै० को हुक्म हुआ था, कि चालीस रोज़

प्राणी व वनस्पति परिवर्तनशील है। इसीलिए एकमात्र पर पुरूष पर पूर्णब्रह्म है। एवं संसार रूपी प्रकृति को अपूर्ण ही कहा जाता है।

तब पुनः प्रियतम! ने कहा कि आप निःसंकोच कहिए, आपकी क्या इच्छा है? हम अवश्य ही आपकी मनोकामना पूर्ण करेंगे। तब उन्होने कहा कि ए प्रियतम! हमारा समुदाय अपनी नादानता व अज्ञानता स्वरूप आपसे क्षमाप्रार्थी है। क्योंकि वह आपके राजदण्ड से भी भयभीत है। इसलिए आप उनकी भूलों को दयालुता पूर्वक क्षमा प्रदान कर दीजिए। तो प्रियतम स्वामी ने कहा कि सर्वप्रथम हम उनको ही क्षमा प्रदान करेंगे। जो कि सत्य मन से कल्मः ब्रह्मवाणी या ब्रह्मज्ञान रूपी तारतम पढ़ेंगे एवं मन, वचन, कर्म से पवित्र एवं सत्य रहनी में होंगे। ऐसे प्राणी अद्वैत की एकदिली के अनुसार मुझको ही अपना अनन्य प्रेम समर्पित करेंगे। परन्तु जो भी कृतघ्न भ्रमवश द्वैतवाद के सिद्धान्त अनुसार अनेकश्वर अर्थात एक परब्रह्म के

---

रोज़ा रखो। और नआलैन पाँव से उतारो और तूर-ए-सीनीन पर आओं। यह मकाम एक हज़ार दर्ज़ा बेहतर है। क्यूँ कर मैं नआलैन समेत आऊँ। हुक्म हुआ, ए मेरे हबीब! मूसा को इस वास्ते नआलीन उतारने का हुक्म हुआ था। कि ख़ाक तूर-ए-सीनीन की उनके पैरों में लगी। जिससे उनको बुर्जुगी हासिल हो। और तेरी नआलैन समीत अर्श को बुर्ज़गी दूँगा। आँ हज़रत स० नआलैन समीत अर्श मजीद पर तशरीफ़ ले गये। तो देखा कि दांई तरफ़ से, अर्श के तीन सौ बारह मिंबर है। और बांई तरफ़ एक मिंबर अज़ीम-उल-शान जड़ाऊँ क़िस्म-ब-क़िस्म जवाहरों से नज़र आया। आँ हज़रत सल्ल० ने अहवाल तीन सौ तेरह मिंबरों का पूछा? खिताब आया कि दांई तरफ़ के सब मिंबर और पैंग़ंबरों के वास्ते बनाऐं है। और बांई तरफ़ का मिंबर तुम्हारे वास्ते है। क्यूँकि अर्श की दांई तरफ़ बहिश्त की तरफ़ में दोज़ख है। जिस वक्त कि तू बांई तरफ़ के मंजर पर बैठेगा, तो ज़रूर है। कि दोज़खों के गुज़र इसी से होगा। उस

स्थान पर अनेक मतो के अंतर्ग असँख्य देवों या ईश्वरों की अर्चना मे लीन या पूजा करने की अवधारणा में सम्मिलत होंगे। उनको तब तक क्षमा नही मिलेगी। जब तक कि वे प्रायश्चित करके अद्वैत स्वरूप एकदिली की सर्वोच्च अवधारणा को आत्मसात् या स्वीकार करके समर्पण नही करते। ऐसे प्राणियों को ही परब्रह्म स्वामी के दण्ड स्वरूप नरकों में पश्चाताप की अग्नि में जलकर पवित्र होना ही होगा।

तो पुनः निर्देश हुआ कि जो कोई प्राणी संसार में एक सामान्य अतिथि के समान रहकर नम्रता पूर्वक सज्जनता का जीवन यापन करेगा, वह प्राणी भी परब्रह्म स्वामी की दयालुता के परिणाम स्वरूप मोक्ष का पात्र होगा। क्यों कि वह संसार को मिथ्या समझकर परब्रह्म की साधना में लीन रहा। अतः परब्रह्म की कृपा से मोक्ष द्वारा अखण्ड सुखों को ही सहज ही प्राप्त कर लेगा।

---

वक़्त अगर कोई तेरी उम्मत में से दोज़ख़ियों के शामिल हो जायेगा। और तू उसकी सिफ़ाअत करेगा। तो मैं उसको बख़्शूगाँ ग़र्ज़ कोई गुनाहगार तेरी उम्मत में से हमेशा अज़ाब-ए-दोज़ख में गिरफ़्तार ना रहेगा। फ़िर रफ़-रफ़ ने आ के मुझको उठा लिया। और हिज़ाब-ए-किबरियाई तक पहुँचा कर ग़ायब हुआ। और मैं इस जगह तन्हा रहा। जब मुझको खौफ़-ए-किबरियाई हुआ। तब नागहा् आवाज़ अबु बक्र र० की सी आवाज़-ए-नागहड़ा मैने सुनी, ऐ मुहम्मद! तवककुफ़ कर बेशक परवरदिगार तेरी सलवात में मशग़ूल है। उस दम मैने इस आवाज़ से मुतवज़्ह होकर अपने जी में कहा या इलाही इस जगह आवाज़ अबू बक्र की कहाँ से आई? लेकिन इस आवाज़ से मेरी दहशत जाती रही। और मैने अर्ज़ की जनाब बारी में, या इलाही! तू नमाज़ पढ़ने से पाक है। आवाज़ अबू बक्र की सी कहाँ से आई? हुक्म हुआ। ए हबीब! ये सलवात रहमत मेरी है। तुझ पर और तेरी उम्मत पर और आवाज़ अबू बक्र की सी इस

इसके पश्चात प्रियतम ने कहा! कि यदि अब आप चाहे तो समस्त संसार की वनस्पति को सोना-चांदी से युक्त कर दूँ। एवं समस्त प्राणियों को आपका अनुयायी बना दूँ तथा आपके समुदाय के लिए अनंत नेमतें प्रदान कर दूँ। तब उन्होने अर्थात प्रिय ने आत्म निवेदन किया। अतः स्पष्ट है कि-

यदि कोई प्राणी परब्रह्म के सामने झोली फ़ैलाकर माया की सांसारिक इच्छा से प्रार्थना करेगा। तो ऐसा प्राणी उस श्वान के समान है जो कि भ्रमवश मायारूपी प्रपंच की सूखी हड्डी को दाँतो से चबाकर अपने ही मसूड़ों से प्रवाहित रक्त को चूसकर आनंदित होता है। तो ऐसे प्राणियों की प्रार्थनाएं परब्रह्म प्रियतम स्वीकार नही करता है। क्योंकि स्वार्थ से निवृत्त होना ही सत्य परमार्थ है अर्थात् निस्वार्थ तन, मन, धन की सेवा ही सर्वोत्तम सेवा कार्य है। एवं ऐसे शुद्ध निर्मल चित्त वालों की समस्त

---

वास्ते थी, कि वह तेरा यार ग़ार और मोनिस, वफ़ादार है। पस ऐसे यार ग़ौर की आवाज़ सुनने से वहशत तेरी इस मकाम में दफ़ा होगी। इस वास्ते मैंने एक फ़रिश्ता बसूरत अबू बक्र रह० के पैदा किया। और आवाज़ इसकी मस्ल अबू बक्र के है। इसी ने आवाज़ दी, तब तेरी वहशत जाती रही। और बाज़ ने यूँ रिवायत की है। कि अब हज़रत सल्ल० का खौफ़ दूर हुआ उस वक़्त एक क़तरा पानी का, कि शीरीं ज़्यादा शहद से और ठंडा अज या वह बर्फ़ से ज्यादा ठंडा था। हज़रत सल्ल० को नज़र आया और इल्म इससे अव्वल और आख़िर का मालूम हुआ। तब वहशत दिल से जाती रही। फ़िर सत्तर हज़ार पर्दा नूर के गिर्द क़ाबः-ए-क़ौसैन में पहुँचे। और वहाँ नूर अहदियत का ज़हूर हुआ। जब आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व आलै व सल्लम नूर-ए-अहदियत को देखा तब सिर मुबारिक सज्दा में रखा। फ़िर एक आवाज़ आई कि ए मेरे दोस्त! मेरे लिए क्या तोहफ़ा लाए हो? हज़रत सल्ल० ने फ़रमाया-

प्रार्थनाए तुरंत ही स्वीकृत होती है।

पुनः परब्रह्म ने उनको कहा कि ए प्रिय! क्या आपको जोश के शक्तिदेव की प्रार्थना स्मरण नही है। तो उनको परब्रह्म के सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान, महिमावान होने का प्रत्यक्ष अनुभव हो गया। जो कि प्रत्येक अदृश्य व ज्ञात-अज्ञात मन की बातों की भी जानकारी रखता है। तो उन्होने उस प्रियतम को पुनः कोटि-कोटि धन्य-धन्य कहा। क्योकि शक्ति देव की सदइच्छा थी, कि जैसे उसने मुझे परब्रह्म के समीप लाने हेतु मिथ्या माया आवरण अर्थात् कर्म बंधन को सहजतापूर्वक पार कराया है। वैसे ही हमारे समुदाय को भी महाप्रलय के पश्चात न्याय दिवस के सुअवसर पर परब्रह्म प्रियतम के निकट ले आयेगा। तब उन्होनें तुरंत तथास्तु! कहकर स्वीकृती दी।

तब परब्रह्म प्रियतम ने अपने प्रिय अर्थात मुहम्मद साहिब को परमधाम के अनंत रहस्यों की जानकारी प्रदान की जो कि नब्बे हज़ार

---

''अल तहीयातु लिल्लाहि वस्स-ल-वातु वत्तय्यिबातु''

यानि बन्दगी जो मन से की गई है। अल्लाह के वास्ते है। और बन्दगी बंदगी बदन की और बन्दगी माल की भी इसी के लिए है। हक़ तआला ने फ़रमाया

''अस्सलामुं अलै क अय्यू हा हन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब-र-कातुहू''

यानि सलाम है। तुझ पर ए नबी और रहमत अल्लाह की और बरकतें उसकी, फ़िर आँ हज़रत सल्ल० ने कहा-

''अस्सलामुं अलैना व अला अिबादिल्लाहिस्सालिहीन''

यानि सलाम है। हम पर और सारे नेक बन्दों पर फ़िर इस मकाम में फ़रिश्तों ने कहा-

''अशहदू अल ला इलाह इल्लल्लाहु व
अशहदू अनं मुहम्मदं अब्दुहू व रसूलूहू''

यानि मैं गवाही देता हूँ कि नही है। के कोई मअबूद बरहक़ सिवा अल्लाह के,

(90,000) शब्दों में समाहित है। चौपाई:

**धाम तालाब, कुंज बन सोहे, मानिक नहरें, वन की जोंए,**
**पश्चिम चौगान, बड़ा वन कहिए, पुखराज,**
**सात घाट, जमुना जी लहिए।**
**आठ सागर, आठ ज़मीं के, ए पच्चीस पक्ष धाम-धनी के।।**

तत्पश्चात उनको निर्देश दिया गया कि इनमें से संसार में तीस हज़ार (30,000) शब्द नियम - विधान के पवित्र क़ुरान के द्वारा प्रकट कर देना व यदि आप चाहे तो तीस हज़ार(30,000) शब्द तरीकत या अध्यात्म के संसार में हदीसों के द्वारा अर्थात् नई व्याख्यां से अपने सच्चे उत्तराधिकारी को कह कर दीक्षित कर देना। यह आपकी इच्छा पर निर्भर है। एवं शेष तीस हज़ार (30,000) शब्दों को जो कि अनंत अखण्ड अनादि आन्नदमयी परमधाम के, अदभुत ब्रह्मज्ञान तारतम का भेद है। जो कि आपको कहे व दिखलाए है। इनको मा'रिफ़त, हक़ीक़त या सत्य ब्रह्मज्ञान

---

और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्ल० बन्दें उसके और रसूल उसके है। और ''वाहिद ला शरीक ला हू'' (अर्थात कोई भी व्यक्ति उसके समकक्ष नही है एवं न ही हो सकता है इस मकाम पर इस वास्ते न कहा, कि वहाँ कोई मुशरिक था। और हक़ तआला ने फ़र्माया ए मेरे हबीब! जो कुछ मैने और तूने और फ़रिश्तों ने इस वक्त कहा है। उसको हर नमाज़ के काअदे में पढ़ों फ़िर फ़रमाया ए हबीब मेरे! अर्श में कुर्सी व लौह-ए-क़लम ज़मीन व आसमान नबातात व जमादात बल्कि जुज़ व क़ुल मख़्लूकात छ: हजार आलम खुश्क के, और बारह हज़ार तरी और आफ़ताब और महताब और सितारें और बुरूज और बहिश्त और दोजख़ तेरी मुहब्बत के सबब मैने बनाए है, और इस वक़्त तेरे वास्ते इजाज़त है। जो चाहे सो माँग मैं दूँगा।

तब आँ हज़रत स० ने सिर-ए-मुबारिक सज्दा में रखा, फ़रमाया ख़ुदा बंद उम्मत गुनाहगार रखता हूँ। और तेरे अज़ाब से डरता हूँ। तू मेरी उम्मत के गुनाह बख़्श और दोज़ख़ की आग से पनाह दे, तब हक़ तआला ने फ़रमाया कि

के शब्द भी कहा जाता है, किसी से मत कहना क्योंकि इन रहस्यों को हमारी प्रिय रूह दो तनों कीं जागनी लीला में तारतम ज्ञान के रूप में प्रकट करें, अर्थात् विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक इमाम मुहम्मद महदी श्री जी महमंत साहिब प्राणनाथ जी के रूप में प्रकट होकर अंतिम समय से पूर्व संसार को ब्रह्मज्ञान का प्रबोध देंगी। जिससे समस्त मानवता जाँति-पाति, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब अर्थात हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, एवं गुरू-शिष्य के मिथ्या मानवीय बंधनो को त्यागकर एक ही परब्रह्म को स्मरण करेंगे।

पुन: उन्होने कहा कि ए मेरे स्वामी! संसार के व्यक्ति मुझसे पूछेंगे, कि हमारे लिए क्या उपहार परमधाम से लाए हो? तो परब्रह्म का निर्देश हुआ कि प्रत्येक प्राणी सन्मार्ग प्राप्ति हेतु उपासना के द्वारा एक वर्ष में छ: (6) माह के उपवास एवं दिन-रात आठ पहर (चौबीस (24) घण्टे) में से पचास (50) समय प्रार्थना करे। तो उन्होने अनुनय-विनय करके इस कठिन साधना पद्धति को पूर्ण करने में अपने समुदाय की असमर्थता प्रकट की।

---

तिहाई गुनाह तेरी उम्मत के बख़्शे, फ़िर आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सज्दा करके अर्ज़ की या इलाही! तमाम गुनाह मेरी उम्मत के अपने कर्म से बख़्श दे। हुक्म हुआ कि जो सिदक़ दिल से कल्मा-ए-तय्यबा एक बार पढ़ेगा, और उसके मजमून आशय पर इत्काद कामिल करेगा। उसको बख़्शूँगा, अगर्चे गुनाहगार होगा। और अगर शिर्क और कुफ़्र तक पहुँचा होगा। तो उसको हर्गिज़ ना बख़्शूँगा जहन्नम के अज़ाब से निजात ना दूँगा, फ़िर हुक्म जनाबे बारी से हुआ, कि ए दोस्त! तूने दुनिया के दरम्यान फ़क़ीरी और ग़रीबी अख़्यार की अगर्चे जबकि दुनिया फ़ानी है। अगर तू दुनिया चाहे तो तमाम जमादात और नबादात बगैर: को सोना-चाँदी बना दूँ और दुनिया को दारूल क़रार कर दूँ। और याकूत और ज़मुर्रद और लू-लू और मर्जान जा बजा पैदा करूँ। ताकि अपनी उम्मतों को लेकर अब्द अला बाद बे-मौत के गुज़रान और सब नेमतें बहिश्त की वही मौजूद कर दूँ। तब आँ सरवर-ए-आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि वसल्लम ने सिर मुबारिक सज्दे में रखकर

तदुपरान्त तीन (3) माह के उपवास व पच्चीस (25) समय की प्रार्थना करने को कहा। तब उन्होनें पुन: विनती कर स्वंय के मन में निश्चय किया, कि यदि दिन-रात में पाँच (5) समय की प्रार्थना एवं एक वर्ष में तीस (30) दिन अर्थात एक माह के उपवास की अनुमति प्राप्त हो जाए! तब परब्रह्म ने तथास्तु! कहा, कि आपने जो भी अपने हृदय में विचार किया है नि:संदेह वैसा ही होगा। तब मुहम्मद साहिब ने अपना शीश झुकाकर नम्रता से तुरंत स्वीकार किया, एवं कहा! कि मेरी व आपकी इन बातों को संसार में कौन मानेगा अर्थात् क्यों स्वीकार करेगा? तब आदेश आया कि सर्वप्रथम इसको आपके सत्य समुदाए में से एक सत्य व्यक्ति आपकी बातों को पूर्ण सत्य मानकर स्वीकार करेगा। तत्पश्चात समस्त संसार आपके ब्रह्मज्ञान के महत्व को स्वीकार करेगा।

क्योकि अंतिम समय से पूर्व समस्त मानवों जाति को एक परब्रह्म के महत्व को स्वीकार करना ही होगा। तथा सबको एक ही सत्य धर्म की

---

मुनाजात की, कि ख़ुदाबंद दुनिया मुर्दार नजस है।

**''अल दुनिया जाफ़तुन व तालिबु हा कि लाबु''**

यानि दुनिया मुर्दार है। और तालिब उसके कुत्ते! है। मुझको दुनिया से आख़िरत बेहतर है। और हक़ तआला ने याद दिलाया, ए हबीब सल्ल० सवाल जिब्रील को तू भूल गया। तब रिसालत मआब स० ने अर्ज़ की या इलाही तू दाना बर है। और सवाल उसका तू खूब जानता है। हुक्म हुआ, ए दोस्त! सवाल जिब्रील का तेरे दोस्तो और सहाबा के वास्ते मैंने मंजूर किया सवाल यह है कि हज़रत जिब्रील ने कहा था। कि या रसूलुल्लाह मुझे तमन्ना है कि क़ियामत के दिन अपने बाज़ूओं को पुल सिरात पर बिछाऊँ और आपकी उम्मत को सलामत पार ऊतारूँ बआद उसके आँ हज़रत सल्ललाहु अलैहि व आलैहि असहाबा वसल्लम ने अपनी उम्मत की मग़फ़िरत के वास्ते दरगाह हज़ूर रहीम में दुआ की, जनाब किबरिया बारगाह ने यानि ने उसे क़बूल फरमाया और बहिश्त की सैर के वास्ते हुक्म किया। तब आँ हज़रत स० ने

महत्ता को अंगीकार करना ही होगा। अत: इसी पवित्र उद्देश्य हेतु ही संसार में तीन प्रमुख सूरतों की अवधारणा प्रचलित है। यथा-

**अलिफ़ कहा मुहम्मद को, ईसा रुहुल्लाह लाम।**
**मीम कहा महदी को, तीनो कहे अल्लाह कलाम।।**

कुरान पाक की सर्वश्रेष्ठ तफ़सीर-ए-मवाहिब-ए- आलिय: के रचनाकार प्रसिद्ध धर्मोपदेशक हज़रत मौलाना कमालुद्दीन हुसैन वाइज़ काशिफ़ी ने पार: सोलह (16) सूर: मरियम में इसका विवरण इस प्रकार संकेतक में लिखा है कि अव्वल या प्रथम बसरी सूरत हज़रत मुहम्मद मुस्तुफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लम की है जिन्होने अरब में अवतरित होकर समस्त मानवता को एकेश्वरवाद के सदमार्ग पर पुन: अग्रसर करने का सूत्रपात किया। पुन: ईसा रूहुल्लाह अर्थात श्यामा जी के तन से अवतरित होकर दूसरी मल्क़ी सूरत के द्वारा पूर्णसत्य निजानंदी ब्रह्मज्ञान रूपी तारतम विचारधारा का प्रसारण करेंगे।

---

तमाम नेमतें बहिश्त की देखी। और जो-जो मकानात अहले बैत और असहाब किबार के वास्ते तैयार हुऐ है। जुदा-जुदा देख के हम्द व सना ख़ालिक-ए-कौन व मकान की बजा लाए और जनाब-ए-बारी से हुक्म आया ए दोस्त! तू मकाम अपनी उम्मत का देख के मुझसे ख़ुश और राज़ी हो। तब हज़रत ने अर्ज़ की ख़ुदावंद बंदे को क्या ताकत है? कि अपने ख़ुदा की नेमत से नाराज़ हो। तब हुक्म हुआ कि ये सब नेमतें बहिश्त की मैंने तेरे दुश्मनों पर हराम की है। बआद उसके आँ हज़रत स० तबक़ात दोज़ख़ के देखने के लिए मुतवजह हुए। और तबकात दोजख़ मुलाहज़ा करते रहे। पहले तबक़ें में कि बा-निस्बत तबकात दूसरे द्वितीय के रंज व अजाब कम था। देखा कि इसके अन्दर सत्तर हज़ार दरिया-ए-आतिश पैदा किनारा ऐसे जोश व ख़रोश से बहते थे। कि अगर थोड़ा सा भी शोर इसका दुनिया में पहुँचे, तो कोई ख़ल्क़ ज़मीन की ज़िन्दा ना रहे। और आँ हज़रत सल्ल० ने मलिक से जो दोजख का दारोगा है से पूछा! कि ये तबका किस ख़ल्क़त के वास्ते अल्लाह ने बनाया है। उसने ये सुन के सिर

तदुपरान्त तीसरी हक़ी सूरत इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़माँ अर्थात् ''सरदार महंमत रूहुल्ला साहिबुज़्ज़माँ श्री जी साहिब प्राणनाथ जी'' के रूप में प्रकट होकर समस्त ब्रह्मांण्ड के व्यक्तियों को अद्वैत एकता के सदमार्ग पर अग्रसर करेंगे। अर्थात सत्य धर्म निजानंद संप्रदाय के रूप में प्रतिष्ठित करके इस्लाम धर्म में प्रचलित विसंगतियों को दूर करेगें। जिससे कि जन साधारण सहज सरलता पूर्वक तारतम ज्ञान प्राप्त करेगा, एवं अखण्ड मुक्ति को सुगमतापूर्वक प्राप्त कर लेगा। यही आलिफ़, लाम, मीम के शब्दों की सांकेतिक विवेचना है। इस प्रकार के शब्दों को हरूफ़-ए-मुक्तआत अर्थात रहस्यवादी संकेतक शब्द के नाम से जाना जाता है। जो कि कुल बारह या चौदह शब्द है जो कि ब्रह्मवाणी कुल्जम शरीफ़ तारतम ज्ञान के द्वारा ही अच्छी प्रकार समझे जा सकते है। चौपाई-

**दिए कुल्ज़म तुमको, और किए सब गर्क।**
**पढ़ो मेरे इल्म को, ताथे भाने तुमारे शक।।**

---

झुका लिया। कुछ जवाब उसका ना दिया। जिब्रील ने फ़रमाया कि ये शर्म से अर्ज़ नही कर सकता है। आँ हज़रत स० ने फ़रमाया बयान कर शायद आज कुछ उसका तदारक हो सके। तब मलिक ने रोकर कहा ये तबका आपकी उम्मत के गुनाहगारों के वास्ते तैयार हुआ है। अपनी उम्मत को नसीहत फ़रमाए और समझाऐं कि गुनाह से बाज़ रहे। वल्लाह क़ियामत के दिन मुझे मजाल तख अजाब व रंज की मुतलक न होगी, तब आँ हज़रत स० ये बात सुन के अमामा सिर मुबारिक से उतार कर आबदीदा मुनाजात करने लगे। कि ए ख़ुदावंद! मुझे उसके देखने से ऐसा ख़ौफ आया, कि ताब व ताकत देखने की न रही। और उम्मत मेरी बहुत जईफ़ व नातवान है। क्यूँ कर इस अज़ाब को बरशास्त करेगी। ख़ुदावंदा तू गफूर व रहीम है। और मुझको तूने उम्मत का पेशवा किया है। और इज़्ज़त और आबरू मेरी तेरी क़ुदरत के कब्ज़े है। पस हबीब मेरे! कुछ ग़म ना करो। क़ियामत के दिन तुम्हारी शिफ़ाअत से इतने लोग बख़्शूगाँ कि तुम राज़ी होगे, तब आँ हज़रत सल्ल० ने फरमाया कि क़स्म

इस प्रकार के गूढ़ ब्रह्मज्ञान को श्रवण-मनन करने के पश्चात उन्होने परमधाम में भ्रमण किया, तथा वहाँ पर जमुना नदी के सुसज्जित तट देखे। जहाँ पर नाना-प्रकार के फल-फूल मेवे अलौकिक वृक्षो पर सुसज्जित है। तत्पश्चात उन्होने हौज़: कौसर तालाब नामक कुण्ड को देखा जिसके तट अमूल्य मणि रत्नों, जवाहरातों से सुसज्जित है। एवं उसका जल अत्यंत शीतल, मधुर, स्वच्छ एवं सुगंधित है। चौपाई-

**पशु-पक्षी या दरख़्त, रूह जिन्स है सब।**
**हक़ अर्श वहदत में, दूजा मिले न कछुए कब।।**

जब वह परमधाम से वापस आए तो अक्षर धाम में शक्ति देव को प्रतीक्षा करते हुए पाया। तब वह उनसे प्रसन्नतापूर्वक गले मिले, एवं वापस पृथ्वी लोक पर प्रकट हो गए। तो कमरे के विस्तर को पूर्ववत गर्म पाया एवं पानी की धारा को भी स्वयं के हाथों से वैसा ही प्रवाहित पाया, जैसा कि शारीरिक पवित्रता के लिए निश्चय करने से पूर्व था। एवं द्वार की संकल -

---

है। तेरी पाक ज़ात की, मैं हर्गिज राज़ी न हूँगा, जब तक कि एक शख़्स को मेरी उम्मत में से बहिश्त में तू ना ले जाऐगा। इसी तरह आँ हज़रत स० के साथ ख़ुदा से नब्बे हज़ार कल्मात-ए-राज़ व नियाज़ और अम्र-ए-वही के इर्शाद हुऐ। और ये जनाब बारी से हुक्म आया कि हर रोज़ पचास वक़्त की नमाज़ और छ: महीने के रोज़े हर बरस में तुम पर और तुम्हारी उम्मत पर मैने फर्ज़ किऐ। फ़िर आँ हज़रत स० ने सिर मुबारक़ सज्दे में रखकर इलह व ज़ारी की और कहा या इलाही! उम्मत मेरी ज़ईफ़ व नातवान, है। और उमर थोड़ी, इस क़दर बारगरान ना उठा सकेगी। हुक्म हुआ। कि हर रोज़ पच्चीस वक़्त की नमाज़ और तीन महीने के रोज़े फर्ज़ किऐ। फ़िर आँ हज़रत स० ने सिर मुबारक सज्दा में रखा। और अपने दिल में इरादा किया। कि अगर रात-दिन में पाँच वक़्त की नमाज़ और बरस में एक महीने के रोज़े फ़र्ज़ हुऐ। तो बख़ूबी अदा हो सके। तब हुक्म रहमान व रहीम का हुआ। कि ए हबीब! मेरे! जो दिल में तूने इरादा किया है। सो मेने क़बूल किया। और पचास वक़्त नमाज़ और छ: महीने के

कुण्ड़े की कड़ियों को आपस में वैसा ही हिलते देखा। जैसा कि साक्षात्कार से पूर्ववत था। यथा चौपाई–

**''बैठक गरमी न टरे, अजूं हिलता उजू जल''**

जब इस अदभुत साक्षात्कार का वर्णन मुहम्मद साहिब ने अपने साथियों से किया। तब उन साथियों ने तुरंत ही इस साक्षात्कार के प्रसंग अनुसार पूर्ण विवरण का प्रत्यक्षत: विश्वास कर लिया। कि यह सत्य बात है। यथा ऐसे ही जैसे कि कोई व्यक्ति बैठा हुआ तो सभा में है। परन्तु उसका ध्यान घर पर अथवा किसी अन्य ध्यान में है। तो आत्मंथन द्वारा अध्यात्म में तल्लीन ऐसे ही व्यक्ति की सूरता को परब्रह्म का जोश–आवेश अपने ध्यान–आकर्षण में ऐसे ही इस प्रकार से रचा–बसा लेता है, जैसे कि छोटे चुम्बक को बड़ा चुम्बक अपनी और आकर्षित करके इस प्रकार ही खींच लेता है।

इस वर्णन को जब कई उनके विरोधियों एवं विधर्मियों ने सुना तो

---

रोज़े का सवाब मिलेगा। मैने तुझको ये बख़्शा फिर आँ हज़रत सल्ल० ने दरगाह इलाही में अर्ज़ की कि इलाही उम्मत मेरी मुझसे पूछेगी सवाल करेगी। कि हक़ तआला के हुजूर से क्या हदया व तोहफ़ा हमारे वास्ते लाऐ हो? मैं उनको क्या ख़ुशख़बरी दूँगा। हुक्म हुआ, कि अव्वल नमाज़ पाँच वक़्त की और रोज़े एक महीने रमज़ान के और तीस हज़ार कल्मात, दीन व दुनियावी इनको दीजिए तीस हज़ार कल्मात जो भेद के है। ये किसी से ना कहना, और बाकी तीस हज़ार कल्मात जो है। उसको चाहो कहो चाहो या ना कहो तब आँ हज़रत स० ने कबूल किया। और सज्दा में सिर मुबारिक रखकर अर्ज़ की, कि या इलाही जो कुछ मैने देखा और सुना है। ये मैं किसको कहूँ? कौन मेरी इस बात का एतबार करेगा? हुक्म हुआ, कि पहले अबू बक्र रजि० तुम्हारी बात को सच जानेगा। पीछे उसके हर एक मानेगा। आँ हज़रत स० सज्दा शुक्र का बजा लाकर बारगाह–ए–बारी से रूख़्सत हुऐ। और रफ़–रफ़ पर सवार सिद्र तुल मुंतहा तक पहुँचे। और वहाँ जिब्रील मुंतज़िर थे। बुर्राक लेकर आगे आऐ।

नाक-भौं सिकोड़ कर मनगढ़ंत, अविश्वसनीय, असत्य व अमान्य मानकर यह कहा कि परब्रह्म तो निराकार, निर्गुण, निरंजन व शुन्य है। तब वह कैसे व किस प्रकार आत्मसाक्षात्कार करा सकता है? इस संदर्भ में ही एक प्रसंग है। कि एक यहूदी ने इस अदभुद साक्षात्कार के प्रकरण को मनगढ़ंत व अविश्वसनीय कहकर अमान्य जानकर इसका खंडन करके बाज़ार या क्रय स्थल में पहुँच कर मछलियां क्रय की, तथा घर आकर अपनी धर्मपत्नि से कहा कि भाग्यवान! इसके तुरंत स्वादिष्ट पकवान पका दो। क्योकि मुझे तीव्र भूख लगी हुई है। एवं तब तक मैं नदी पर स्नान कर आता हूँ। वह नदी में स्नान करने हेतु निर्वस्त्र होकर उतरा तथा स्नान करके बाहर आया। तो अपना तन नारी के रूप में परिवर्तित देखा एवं अपने वस्त्र गायब या अद्धृष्य पाए तब शर्म व लज्जावश उसने स्वयं को वृक्ष इत्यादि के पत्तों में छिपा लिया।

कुछ समय पश्चात एक सज्जन घुड़सवार वहां से जा रहा था। उसने

---

फ़िर आँ-हज़रत स० बुर्राक पर सवार होकर बैतुल अक़्सा में पहुँचे। और नबी व मुर्सल वहाँ इतंज़ार कर रहे थे। उन सब ने आँ हज़रत स० को देखकर मुबारकबाद और मआनका और मुसाफा किया। फ़िर जिब्रील ने अज़ान दी। और हज़रत स० ने इमामत की। और जुम्ला अंबियाओं और अरवाहो ने मुक़त्दी होकर नमाज़ पढ़ी बआद इसके वहाँ से रूख़्सत हो के और आसमानों से पार होकर बीबी उम्म-ए-हानी रजि० के घर में तशरीफ़ लाऐं और जिब्रील आँ हज़रत स० को मकान पर पहुँचा के बुर्राक लेकर गये। जब आँ हज़रत स० अपने बिस्तर पर तशरीफ़ लाऐ। बिस्तर गर्म पाया। और जिस जगह पर बज़ू किया था। वहाँ से पानी बहते और हुजरे की ज़ंजीर को हिलते देखा। मर वी है। कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बआद नमाज़-ए-फ़ज्र के हिकायात मे'राज शरीफ़ की अबु बक्र सिद्दीक़ और सहाबा रज़िउल्लाह तआला अन्हुम से बयान फ़रमाते थे। अबू बक्र सिद्दीक रजिउल्लाहु ने ये बात सदाक़त आयत सुनते ही कहा। ''सदक़्ता या रसूलुल्लाह सल्ल०'' यानि ए

उसकी निवस्त्रता को देखकर एवं अनाथ, असहाय एवं अबला स्त्री समझकर अपने कुछ वस्त्र उसे पहननें को दिए। तथा उसको अपने सरंक्षण में ले लिया। तत्पश्चात उसको दया व सहानुभूति का पात्र समझकर उससे विवाह सम्पन्न करके अपनी धर्मपत्नि का सम्मान प्रदान किया। परिणामत: उनके यहां तीन वर्षो में तीन बालकों ने जन्म ले लिया।

एक दिन पुन: वह स्त्री अपनी सखियों के साथ नदी तट पर स्नान करने के लिए पहुँच गई। जब स्नान करके नदी से बाहर निकली, तो पुन: स्वयं को पुरूष रूप में परिवर्तित देखकर विस्मित होकर अपने घर पहुँचकर पत्नि को भोजन न तैयार करते देखकर क्रोधपूर्वक डांट-फटकार लगाई, कि अभी तक भोजन तैयार नही किया। तो पत्नि ने आश्चर्य व कौतहूल पूर्वक कहा कि हे स्वामी! अभी तो आपने भोजन हेतु सामग्री मुझको प्रदान की है। तो तुरंत कैसे तैयार हो जाएगी? क्या मैं इंद्रजाल! जादूगरी को जानती हूँ। जो तुरंत कहते अथवा इच्छा मात्र से ही आपका

---

ईश कृपा पात्र अवतार आप पूर्ण सत्य है। सबब से इनका लकब सिद्दीक रजि० हुआ। और अबु जहल वग़ैर: ने ये सुन के कहा कज़बत इस वास्ते इन काफ़िरों को खिताब कज़्ज़ाब व ज़िंदीक़ व मलऊन का दिया गया। और जो कोई हज़रत अबु बक्र रजि० के मुवाफ़िक़ रसूलुल्लाह सल्ल० की मे'राज पर तस्दीक करेगा वह बेशक वह अबु बक्र सिद्दीक के मर्तबें में है। और जो कोई मुन्किर-ए-मे'राज होगा। यकीनं मुताबिक अबु ज़हल के ताईन है। और इस महफ़िल में एक यहूदी गँवार ने अकवाल मे'राज शरीफ़ का सुनकर आँ हज़रत को झूठा कहा। और हज़रत के पास से उठ के बाज़ार में आ के एक बड़ी मछली मोल लेकर अपनी बीवी को दी। और कहा। जल्दी इस मछली के क़बाब बना, मैं भूख से बेताब व बेक़रार हूँ। इतना दिन आया, तब तक नहारमुन रहा अब मैं दरिया से नहा के आऊँगा, तो खाना खाऊँगा। वह यहूदी यह कहकर तब दरिया पर गया। और कपड़े किनारे पर रख के पानी में गुसल करने को उतरा और गोता लगाया। जब सर उठाया अपना तन एक औरत

आदेश पूर्ण कर लूंगी।

तब वह व्यक्ति लज्जित होकर हुज़ूर मुहम्मद साहिब की धर्मसभा में पहुँचा, एवं अपनी भूल स्वीकार करके कहा कि हे सत्य मान्यवर! अंतिम अवतार! मैंने आपके साक्षात्कार के वार्तालाप की व्याख्याँ को मनगढ़त अविश्वसनीय जानकर अज्ञानतावश ही आपका तिरस्कार किया था। परिणामत: परब्रह्म ने मुझको माया के छदम आवरण में ग्रसित करके आपकी बातों की पूर्ण सत्यता का प्रमाण दे दिया।

अत: मुझे अब पूर्ण विश्वास है कि नि:संदेह आप पूर्ण सत्य अंतिम अवतार है। मैं आप पर, एवं परब्रह्म के अद्वैत एकदिली पर पूर्ण विश्वास लाकर आपका सच्चा संयमी अनुयायी साथी बनना चाहता हूँ।

कृपया मुझ अज्ञानी पर अनुग्रह कीजिए! तब मुहम्मद साहिब ने उसको अपने सत्य समुदाय में दीक्षित करके तारतम प्रदान करके अखण्ड मोक्ष का सद्मार्ग प्रदान किया।

---

जवान की सूरत पाया। और जो कपड़े किनारे पर रखे हुए थे। वह भी न मिले, ये माजरा अज़ीब-व-गरीब देखकर बहुत घबराया और गर्दाब तहीर में फ़िर गोता लगाया, किनारे के पास आबरू के सबब आँखो से, अपनी आबरू पर रो-रो के आँसू बहाकर बार-बार हाथ पर हाथ मारता और मुँह से है हात - है हात पुकारता नंगा बदन देखकर हया व शर्म आई। तो दरख़्त के पत्तों से शर्मगाह छुपाई। इतने में एक सवार कि घोड़े पर सवार था। इस तरफ़ से गुजरा देखा! कि एक औरत हसीन नंगी बैठी है। वह वालह व शैदा हो के हाथ उसका पकड़ा और घोड़े पर चढ़ा घर में ले गया, और अपने निकाह में लाया। गर्ज़ कि सात बरस उसको उस जवान की खातरदारी में गुज़रे और तीन फ़र्ज़द उससे तहवल्लुद्द हुए। एक दिन वह औरत हमसाया औरतों के साथ दरिया में नहाने को गई। और जिस जगह पर पहले कपड़े रखे थे। उसी जाए पर अब के भी कपड़े उतार के रखे। और वह वारदात भूलकर नहाने में मशग़ूल हो, गोता मार के सर को अपने तईन सूरत असली पर देखा और किनारे पर जो मर्दाने कपड़े

**''क्या देखी हम दुनिया, जो इनको न करे अखण्ड''**

उपर्युक्त विवेचन के समानांतर ही एक घटना हिंदू धर्म ग्रंन्थों में मार्कण्डेय ऋृषि व नारायण भगवान के कथानक के रूप में वर्णित है। जिसमें मार्कण्डेय ऋृषि अपने घनघोर तपस्या के परिणाम स्वरूप एवं नारद मुनि के निर्देशानुसार भगवान आदि नारायण से कहते है। कि हे स्वामी! मुझे अपने चरणों से दूर भी न करना। एवं अपनी माया भी दिखा दीजिए। तत्पश्चात माया की भयंकरता को देखकर भयाक्रांत होकर क्षमा याचना करके अपनी भूल स्वीकार करते हैं। यथा-

**''अर्स ल्यो या दुनिया, दोऊ पाइए न एकै ठौर''**

अत: साथियो! हमें हृदय से विचार करके पुन: स्मरण करना चाहिए कि परमधाम से न तो कोई अलौकिक या दिव्य तत्व मिथ्या संसार में आ सकता है। एवं न ही कोई सांसारिक प्राणी अपने भौतिक तन से परमधाम में प्रवेश कर सकता है यथा-

---

पहले रखे थे। वहां ही पाए। जब कपड़े पहन करके घर में आए। तो देखा कि मछली जो बाज़ार से लाकर अपनी जोरू को दी थी। सो अब तक जीती तड़फ रही है। और उसकी औरत के हाथ में जो काम था। वही काम वह करती है। और बाज़ रिवायत में यूँ है। कि उसकी ज़ोरू सूत कात रही थी। हुनुज वह पूनी उसके हाथ से तमाम ना हुई थी। तब उसने जा के अपनी औरत से कहा! कि अब तक मछली ना पकाई इतनी देर तूने क्यों की? उसकी औरत बोली कि मिंया ख़ैर तो है? आए हो, अभी मछली लाए हो एक लहज़े में कही मछली पकती है? फ़िर उसने सब बारदात बीती हुई। बयान की, वह बोली अजी! अभी बहुत दौर हूँ। नशे में चूर हो। उसने ये बात सुनके दिलग़ीर जाना कि मैंने हाल मे 'राज का सच ना जाना था। और रसूल-ए-खुदा को झूठा बनाया था। इसी सबब से ये हाल मुझ पर गुज़रा। इसमें कुछ शक नही। पर मैने यकीन पूर्ण किया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सच्चे है। और दीन-ए-इस्लाम बरहक़ है। हासिल कलाम उस यहूदी को इस्लाम की ख़्वाहिश हुई। उस वक़्त जनाब रिसालत मआब के पास आया। देखा कि आप मे 'राज शरीफ़

**''कंकरी उड़ावे एक अर्श की, ए जो चौदह तबक''**

इसीलिए सर्वसिद्ध है कि चितवन द्वारा सूरता ही प्रियतम के परमधाम का साक्षात्कार करती है। चौपाई–

**जिमीं जात भी रूह की, रूह जात आसमान।**
**जल तेज़ वायु सब रूह को, रूह जात अर्श सुब्हान।।**

इसी कारण हमें शुद्ध निर्मल चित्त द्वारा ही चितवन करना चाहिए। जिससे कि दोनो आन्नद हमें प्राप्त हो। यथा–

**''लाहा लीजे दोनो ठौर का''**

तो फिर क्यो नही हम प्रयास करके चितवन द्वारा परब्रह्म प्रियतम स्वामी का साक्षात्कार कर सकते। जबकि अंतिम अवतार का कथन है, यथा–

**''मुझमें एवं मेरे साथी में कोई भी अंतर नही है।**
**वह साथी मेरे ही प्रतिबिंब स्वरूप है।'' ( हदीस )**

---

का अहवाल बयान फरमाते है। तब उसने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह मे'राज को मैं झूठ जानता था। सो उसकी ताज़ीर पाई सहाबा ने पूछा! तूने क्या ताज़ीर पाई? तब उस यहूदी ने हक़ीक़त सब मछली की, और गुसल और सूरत बदलने और निकाह और औलाद और सात बरस गुज़रने और फिर असल सूरत पर आने की कैफ़ियत बयान की ये बात सुन के सहाबा रजि० ने सज्द: शुक्र जनाब रब्बुल आलमीन का बजा लाए। और कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ये मोजिज़ा आपके वास्ते है। किसी को ऐसा इनायत नही हुआ। आख़िर वह यहूदी ईमान लाया और अबू ज़हल का कुछ इतर न हुआ और कहा कि ये सब फ़रेबबाजी और इफ़्तरासाज़ी है। तब आँ हज़रत ने फ़रमाया **''युज़िल्लु बिही कसीरव-व यहदी विही कसीरन् व मा युज़िल्लु बिही इल्लल्-फ़ासिकीन''** तर्जुमा यानि जिसको अल्लाह राह दे, फ़िर नही कोई बहकाने वाला उसका और जिसको अल्लाह बहकावें फ़िर कोई नही उसे राह देने वाला, और जब खबर मे'राज शरीफ़ की मक्क़ा में मशहूर हुई। तब अक्सर

तो हम भी अपने मिथ्या मान, अभिमान की तिलाजंलि देकर एक अद्धैत स्वरूप सच्चिदानंद प्राणों के नाथ प्रियतम की पहचान प्राप्त करके अखण्ड आन्नद को प्राप्त करने हेतु प्रयास करें।

**''इतही बैठे घर जागे धाम, हुए पूरे मनोरथ सब काम''**

अत: हमें अपनी कहनी रहनी व करनी अपने सदगुरू के समान करनी चाहिए। यही वास्तविक जागनी है, क्योंकि ब्रह्मवाणी का कथन तभी सत्य सिद्ध होता है जबकि

**कहनी सुननी गई रात में, अब आया रहनी का दिन।**
**रहनी रूह पहुँचावही, कहनी लग रही चाम।।**

इसीलिए हमें आत्म साक्षात्कार से पूर्व अपने दैहिक व नैतिक आचरण को शुद्ध करना चाहिए जिसे कि प्रियतम के अनन्य प्रेम को समस्त साथी सहजता पूर्वक ही प्राप्त कर सकते हैं।

इसी कारण हमें धर्मग्रन्थों में वर्णित किस्से-कहानियों को एक प्रेरणा

---

अहल-ए-मक़्का मुतवज: होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए और कहा कि अगर आप तमाम अहवाल बैतुल मुक़द्दस का हमसे बयान करे। तो हम आपके मे'राज के हाल पर ईमान लावें। और सिद्क दिल से मुसलमान होवें। क्यों कि हम सब अलामत बैतुल मुक़द्दस की ख़ूब जानते है। अगर आप आसमांन पर गये होंगे, तो वहां का हाल भी आपको मालूम होगा? अगर तुम सच्चे हो? तो निशान-ए-बैतुल मुकद्दस का बयान करो? तब आँ हज़रत को बैतुल मुक़द्दस के निशान बताने में थोड़ा सा ताआमुल हुआ। इस वास्ते कि अहवाल मस्जिद बैतुल मुकद्दस का बयान करना, उस वक्त कुछ ज़रूरी ना था। इतने में जिब्रील अलैहिस्सलाम ख़ुदा के हुक्म से बैतुल मुकद्दस को अपने परों पर उठा लाए। और आँ हज़रत के सामने ला रखा, उस वक़्त जो कुछ लोग पूछते थे? पैग़ंबर-ए-खुदा उसको बयान फ़रमाते थे। जो आदमी नेक बख़त असली और सईद अज़ली थे। ईमान लाए। और सदक़तो या रसूलुल्लाह कहा और जो लोग बद बख़्त जाति थे। और जिस्म

मानकर सीधे सत्य मार्ग पर अग्रसर होकर आत्म जागृति के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु तत्पर होना चाहिए। यही अखण्ड मुक्ति के सोपान का प्रवेश द्वार है।

अंतत: जो व्यक्ति परब्रह्म स्वरूप सत्य सदगुरू से तारतम ज्ञान रूपी ब्रह्मज्ञान को पा जाता है। वह तारतम रूपी ब्रह्मज्ञान से सहज ही माया के भवसागर को गो-पद-वच्छ के समान सरलतापूर्वक पार कर लेता है, एवं सदगुरू की कृपा से अखण्ड मुक्ति को प्राप्त करके अखण्ड, आन्नद एवं परम अद्वैत में समाहित होता है। वास्तव में सत्य सदगुरू प्रदत्त तारतम रूपी ब्रह्मज्ञान ही पूर्ण सत्य परब्रह्म स्वरूप है। चौपाई-

**महामत रूहे ए मोमिनों, ए सुख अपने अर्श के।**
**एक पलक छोड़े नही, भला चाहे आपको जो।।**

महंमत रुहुल्लाह साहिबुज़्ज़माँ किताब क़ुल्ज़्म शरीफ़ परिक्रमा 16/12

---

खाक का आसमान पर जाना ख़िलाफ़ क़यास जाना। और हक़ तआला की क़ुदरत कामिल से गाफ़िल हो के उसका इंकार किया। पस ए नेक तालेह मेहरबानों के है। इस अक़ीदे की बदला अहसान जानो कि आसमान हैत व बखुम र्मसद और हीदस की दलील से साबित किया, कि माहताब अगर्चे सितारों में छोटा है। मगर जाम: उसका ज़मीन से बहुत बड़ा है। और बा सबब गर्दिश फलक के हज़ारो बरस की राह एक लहज़े में तै करता है। और अपनी हरकत मग़रिब से मशरिक़ के सैकड़ो बरस की राह एक घड़ी में जाता है। जब ये सैर बैशर्रयत माहताब की अन्दालक़्ल महल नही, तब आफ़ताब नबूव्वत का कि जिस के नूर से सब कुछ पैदा हुआ है। अगर थोड़ी सी रात में अर्श के ऊपर जावे और आवे क्या अजब है। और शैतान के बदतरीन, उस खल्कुल्लाह से है। वह एक लहज़ा में मशरिक़ से मग़रिब तक और जनूब से शमाल तक जाता है। और जो शख़्स कि बेहतरीन मख़्लूक़ात हो। अगर थोड़ी

# मुहंमद नूर अना मिन अल्लाहू व क़ुल सैयं मिंनूरी

मुक़द्दस किताब क़ुल्ज़म शरीफ़
सरदार महंमत रूहुल्ला साहिबुज़्ज़माँ